CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2018 with Solution PDF-Set 2/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 111**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (क): भाषा व्यवसायी से क्या अभिप्राय है? उनकी पोल कब खुलने लगती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा के नाम पर स्वार्थ साधने वालों की पहचान।
- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उनका संदर्भ है।

चरण 1: शब्द का संदर्भ समझना गद्यांश में लेखक उन व्यक्तियों को भाषा व्यवसायी कहता है जो भाषा की सेवा का दावा करते हुए अपने राजनीतिक अथवा निजी स्वार्थ साधते हैं। उनके लिए भाषा जनजीवन और संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम कम तथा अपना प्रभाव बढ़ाने का साधन अधिक बन जाती है। इसीलिए लेखक ने उनके व्यवहार के साथ राजनीति का मुखौटा ओढ़ने की बात कही है।

चरण 2: पोल खुलने की परिस्थिति जब हिन्दी के पक्ष या विरोध में कोई हलचल होती है, तब ये लोग अपने हितों के अनुसार सक्रिय और बेचैन होने लगते हैं। उनकी प्रतिक्रिया में वास्तविक भाषाप्रेम के बजाय राजनीतिक स्वार्थ दिखाई देता है और उनका छिपा हुआ रूप सामने आ जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा व्यवसायी वे लोग हैं जो भाषा के नाम पर राजनीति करते और अपना स्वार्थ साधते हैं। हिन्दी के समर्थन या विरोध में हलचल होते ही उनकी बेचैनी और स्वार्थपूर्ण प्रतिक्रिया से उनकी पोल खुलने लगती है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों अंशों के लिए गद्यांश से अलग-अलग संकेत चुनें और उत्तर में कारण तथा परिणाम का स्पष्ट संबंध रखें।

1(ख). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ख): संविधान में 'संघ' से आप क्या समझते हैं? हिन्दी भाषा को लेकर संघ का क्या कर्तव्य बताया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद 351 में संघ की भूमिका।
- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उनका संदर्भ है।

चरण 1: संघ का अर्थ इस गद्यांश में संविधान के संदर्भ में संघ से आशय भारत की केंद्र सरकार अर्थात केंद्रीय शासन से है। यह शब्द किसी सामाजिक संस्था या भाषाई संगठन के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ है। लेखक केंद्रीय शासन को हिन्दी के विकास के संवैधानिक दायित्व की याद दिलाता है।

चरण 2: निर्दिष्ट कर्तव्य स्पष्ट करना संघ का कर्तव्य हिन्दी का प्रसार और विकास करना है, ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति कर सके। इसके लिए हिन्दी की प्रकृति सुरक्षित रखते हुए हिन्दुस्तानी तथा आठवीं अनुसूची की भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पद आत्मसात् किए जाने चाहिए। आवश्यक शब्द मुख्यत: संस्कृत और गौणत: अन्य भाषाओं से लेकर उसका शब्दभंडार समृद्ध किया जाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष संघ का अर्थ भारत की केंद्र सरकार है। उसका कर्तव्य हिन्दी का प्रसार, विकास तथा शब्दभंडार की समृद्धि सुनिश्चित करना है, जिससे हिन्दी भारतीय संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम बन सके।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों अंशों के लिए गद्यांश से अलग-अलग संकेत चुनें और उत्तर में कारण तथा परिणाम का स्पष्ट संबंध रखें।

1(ग). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ग): हिन्दी भाषा के विकास की आवश्यकता क्यों है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हिन्दी के विकास का सांस्कृतिक और व्यावहारिक उद्देश्य।
- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उनका संदर्भ है।

चरण 1: सांस्कृतिक उद्देश्य पहचानना गद्यांश में उद्धृत संवैधानिक निर्देश के अनुसार हिन्दी का विकास इसलिए आवश्यक है कि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। विविध भारतीय भाषाओं की अभिव्यक्तियों को आत्मसात् करके ही वह देश के व्यापक सांस्कृतिक जीवन को व्यक्त करने में अधिक समर्थ हो सकती है।

चरण 2: व्यावहारिक आवश्यकता समझना लेखक शिक्षा, व्यापार, व्यवहार, संसद, शासन और न्याय की प्रक्रियाओं में हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं को पर्याप्त स्थान न मिलने पर चिंता व्यक्त करता है। हिन्दी का विकास उसे इन क्षेत्रों की आवश्यकताओं के योग्य बनाने और अपनी भाषाओं की अस्मिता तथा भविष्य सुरक्षित रखने के लिए भी जरूरी है।

चरण 3: निष्कर्ष हिन्दी का विकास आवश्यक है ताकि वह भारतीय सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों को व्यक्त कर सके और शिक्षा, शासन, न्याय तथा जनव्यवहार की प्रभावी भाषा बने। इससे अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य को भी बल मिलेगा।

त्वरित सुझाव: हिन्दी के विकास की आवश्यकता बताते समय संस्कृति की अभिव्यक्ति और शिक्षा-शासन में प्रभावी प्रयोग को उत्तर के दो आधार बनाएँ।

1(घ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (घ): भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का क्या तात्पर्य है? यहाँ उनका उल्लेख क्यों हुआ है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हिन्दी की समृद्धि में अन्य भारतीय भाषाओं का योगदान।
- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उनका संदर्भ है।

चरण 1: अन्य भाषाओं का आशय यहाँ भारत की अन्य भाषाओं से आशय हिन्दी के अतिरिक्त देश में प्रयुक्त भारतीय भाषाओं से है। अनुच्छेद 351 के उद्धरण में विशेष रूप से संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारतीय भाषाओं का उल्लेख है। इसलिए इसका आशय विदेशी भाषाओं से नहीं, देश की अपनी भाषाई परंपराओं से है।

चरण 2: उल्लेख का प्रयोजन इन भाषाओं के रूप, शैली और पदों को हिन्दी में आत्मसात् करके उसे समृद्ध करने के लिए उनका उल्लेख हुआ है। लेखक के अनुसार यह ग्रहण हिन्दी की अपनी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना होना चाहिए। इस प्रकार विभिन्न भारतीय भाषाओं का सहयोग हिन्दी को व्यापक भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्य भाषाओं से आशय हिन्दी के अतिरिक्त भारतीय भाषाओं, विशेषत: आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाओं से है। इनके रूप, शैली और पद ग्रहण कर हिन्दी को समृद्ध तथा भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति के योग्य बनाने के लिए उनका उल्लेख हुआ है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों अंशों के लिए गद्यांश से अलग-अलग संकेत चुनें और उत्तर में कारण तथा परिणाम का स्पष्ट संबंध रखें।

1(ङ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ङ): 'अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता' से क्या तात्पर्य है? उसका क्या परिणाम हो रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अंग्रेज़ी के प्रति भाषाई श्रेष्ठताबोध का प्रभाव।
- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उनका संदर्भ है।

चरण 1: मानसिकता का अर्थ अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता से आशय उस दृष्टि से है जिसमें अंग्रेज़ी को ही श्रेष्ठता और प्रगति का आधार मानकर अपनी भारतीय भाषाओं की उपेक्षा की जाती है। यहाँ लेखक केवल अंग्रेज़ी सीखने की बात नहीं करता, बल्कि उसके ऐसे वर्चस्व पर चिंता व्यक्त करता है जो अपनी भाषाओं के प्रति सम्मान और विश्वास को कमजोर करता है।

चरण 2: परिणाम बताना यह मानसिकता युवा और किशोर पीढ़ी पर भी हावी हो रही है। फलत: इसी देश की मिट्टी से जन्मी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में दिखाई देता है। शिक्षा, व्यापार, व्यवहार तथा संसदीय, शासकीय और न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को अपेक्षित प्रमुखता नहीं मिल पा रही है।

चरण 3: निष्कर्ष इस मानसिकता का अर्थ अंग्रेज़ी को श्रेष्ठ मानकर अपनी भाषाओं की उपेक्षा करना है। इसके प्रभाव से युवा पीढ़ी अपनी भाषाओं से दूर हो रही है, उनकी अस्मिता और भविष्य संकट में हैं तथा महत्वपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्रों में उन्हें अपेक्षित स्थान नहीं मिल रहा है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों अंशों के लिए गद्यांश से अलग-अलग संकेत चुनें और उत्तर में कारण तथा परिणाम का स्पष्ट संबंध रखें।

1(च). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (च): यह कैसे कह सकते हैं कि हमारी अपनी भाषा का भविष्य संकट में है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भारतीय भाषाओं के संकट के पाठगत प्रमाण।
- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त विचार और उनका संदर्भ है।

चरण 1: नई पीढ़ी की स्थिति देखना लेखक बताता है कि अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर तथा हमारी युवा और किशोर पीढ़ी पर बहुत अधिक हावी हो चुकी है। नई पीढ़ी में अपनी भाषाओं के प्रति घटता विश्वास और अंग्रेज़ी का बढ़ता वर्चस्व इस चिंता का कारण है कि भारतीय भाषाओं की पहचान और भावी स्थिति कमजोर पड़ सकती है।

चरण 2: सार्वजनिक क्षेत्रों में स्थिति देखना शिक्षा, व्यापार और व्यवहार के साथ संसदीय, शासकीय तथा न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व नहीं मिल पा रहा है। संवैधानिक संकल्प और कार्यक्रम भी अपेक्षित प्रभाव नहीं डाल सके हैं। जब भाषाएँ नई पीढ़ी और महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्रों में पर्याप्त स्थान न पाएँ, तो उनके भविष्य के संकट की चिंता स्वाभाविक है।

चरण 3: निष्कर्ष अंग्रेज़ी का वर्चस्व युवा और किशोर पीढ़ी पर बढ़ रहा है तथा शिक्षा, व्यापार, शासन, संसद और न्याय में अपनी भाषाओं को पर्याप्त प्रमुखता नहीं मिल रही है। संवैधानिक प्रयासों की अपेक्षित सफलता न दिखने से उनकी अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषाओं के संकट के दो प्रमाण चुनें: नई पीढ़ी पर अंग्रेज़ी का प्रभाव और सार्वजनिक कार्यक्षेत्रों में भारतीय भाषाओं की उपेक्षा।

1(छ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (छ): हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व से आप क्या समझते हैं? यह कैसे संभव हो सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वर्चस्व का संबंध सार्वजनिक जीवन में भारतीय भाषाओं के प्रभावी प्रयोग से है।
- उत्तर में वर्चस्व का अर्थ और उसे संभव बनाने के उपाय दोनों स्पष्ट किए जाने चाहिए।

चरण 1: वर्चस्व का आशय हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व का अर्थ है कि शिक्षा, व्यापार, दैनिक व्यवहार, संसद, शासन तथा न्यायिक कार्यों में इन भाषाओं को प्रमुख स्थान मिले। जनता अपनी भाषा में ज्ञान प्राप्त कर सके और सार्वजनिक कार्य सहजता से संपन्न कर सके। यहाँ वर्चस्व का आशय भारतीय भाषाओं की कार्यक्षम प्रतिष्ठा से है।

चरण 2: इसे संभव बनाने के उपाय यह स्थिति संविधान के भाषा संबंधी संकल्पों को प्रभावी ढंग से लागू करने से संभव होगी। अंग्रेज़ी की श्रेष्ठता वाली मानसिकता से मुक्त होकर भारतीय भाषाओं को व्यवहार में अपनाना होगा। हिन्दी का प्रसार और विकास किया जाए तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और शब्दों को आत्मसात् करके उसे समृद्ध बनाया जाए। शिक्षा और प्रशासन में इन भाषाओं का नियमित प्रयोग भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का वर्चस्व सार्वजनिक जीवन के विविध क्षेत्रों में उनकी प्रमुख और प्रभावी भूमिका है। संवैधानिक संकल्पों के कार्यान्वयन, भाषाओं के विकास और उनके वास्तविक प्रयोग से यह संभव है।

त्वरित सुझाव: वर्चस्व का अर्थ बताने के बाद गद्यांश में उल्लिखित शिक्षा, शासन और न्याय के क्षेत्रों को उपायों से जोड़ें।

1(ज). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ज): गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को कम शब्दों में व्यक्त करता है।
- यहाँ चर्चा हिन्दी के विकास के संवैधानिक संकल्प और व्यवहार में उसकी उपेक्षा की है।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानें गद्यांश में अनुच्छेद 351 के माध्यम से हिन्दी के प्रसार तथा विकास का संकल्प बताया गया है। इसके बाद लेखक पूछता है कि शिक्षा, शासन और व्यवहार में हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं को अपेक्षित स्थान क्यों नहीं मिल पाया।

चरण 2: शीर्षक का औचित्य शीर्षक में हिन्दी की वर्तमान स्थिति और उसके सामने उपस्थित कठिनाई, दोनों का संकेत होना चाहिए। केवल अंग्रेज़ी या केवल संविधान पर आधारित शीर्षक गद्यांश के पूरे भाव को व्यक्त नहीं करेगा।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है : 'हिन्दी : संवैधानिक संकल्प और वर्तमान चुनौती।'

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय संविधान की अपेक्षा और भारतीय भाषाओं की वास्तविक स्थिति के बीच का अंतर ध्यान में रखें।

2(क). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (क): क्षमा कब कलंक और कब शृंगार हो जाती है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में समर्थ व्यक्ति की क्षमा और विवश व्यक्ति की क्षमा में अंतर किया गया है।
- क्षमा का मूल्य उसे करने वाले के साहस और सामर्थ्य से जुड़ा है।

चरण 1: कलंक बनने की स्थिति जब व्यक्ति में अन्याय का प्रतिकार करने का साहस नहीं होता और वह विवशता से प्रहार सहता है, तब उसकी क्षमा कायरता का रूप ले लेती है। ऐसी क्षमा वीरता की प्रतिष्ठा घटाती है, इसलिए कलंक है।

चरण 2: शृंगार बनने की स्थिति जब शूरवीर दंड देने में समर्थ होते हुए भी उदारता से क्षमा करता है, तब वह आत्मसंयम और शक्ति का परिचय देता है। इसी भाव से कवि ने क्षमता के साथ की गई क्षमा को शूरवीरों का शृंगार कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष असमर्थता और भय से की गई क्षमा कलंक है, जबकि प्रतिकार की क्षमता होते हुए उदारता से की गई क्षमा शूरवीरों का शृंगार है।

त्वरित सुझाव: क्षमा के दोनों रूपों में निर्णायक अंतर पहचानें : विवशता से सहना और सामर्थ्य होते हुए क्षमा करना।

2(ख). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (ख): प्रतिशोध किसे कहते हैं? वह कब आवश्यक होता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतिशोध का आशय अपने प्रति हुए अन्याय या आक्रमण का प्रतिकार है।
- पद्यांश में उसका औचित्य स्वाभिमान की रक्षा से जुड़ा है।

चरण 1: प्रतिशोध का अर्थ किसी के द्वारा किए गए अत्याचार, अपमान या आक्रमण का प्रत्युत्तर देना प्रतिशोध कहलाता है। पद्यांश में कवि इसे शौर्य के जागरण से जोड़ता है; यह केवल दूसरे का धन छीनने या लोभवश लड़ने का नाम नहीं है।

चरण 2: आवश्यक होने की परिस्थिति जब अन्यायपूर्ण प्रहार और अपमान सहने से व्यक्ति या जाति का स्वाभिमान नष्ट होने लगे, तब प्रतिकार आवश्यक हो जाता है। चोट खाकर जागते सिंह का उदाहरण इसी साहसपूर्ण प्रतिरोध को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्याय या आक्रमण का प्रत्युत्तर प्रतिशोध है। स्वाभिमान और सम्मान की रक्षा के लिए अत्याचार का प्रतिकार करना आवश्यक हो जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रतिशोध को लोभ की लड़ाई से अलग रखते हुए अन्याय के प्रतिकार और स्वाभिमान की रक्षा से जोड़ें।

2(ग). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।
प्रश्न (ग): सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप दोनों क्यों माना गया? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एक ही गुण का मूल्य परिस्थिति और उसे अपनाने वाले की सामर्थ्य से बदल सकता है।
- कवि विजेता और पराजित जाति की सहिष्णुता में भेद करता है।

चरण 1: विभूषण क्यों विजेता समर्थ होने पर भी संयम रखता है और क्षमा करता है तो उसकी सहिष्णुता उदारता का परिचय देती है। विजय के बाद प्रताड़ना से बचना उसकी शक्ति को गरिमा देता है; इसलिए सहिष्णुता उसका विभूषण है।

चरण 2: अभिशाप क्यों पराजित जाति यदि अपमान और अत्याचार का विरोध किए बिना सहती रहती है तो उसकी सहिष्णुता विवशता और कायरता बन जाती है। ऐसी निष्क्रियता उसके आत्मसम्मान तथा शौर्य को दबाती है, इसलिए कवि उसे अभिशाप कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष समर्थ विजेता की सहिष्णुता उदारता होने के कारण विभूषण है; अपमान का प्रतिकार न करने वाली पराजित जाति की सहिष्णुता विवशता होने के कारण अभिशाप है।

त्वरित सुझाव: विभूषण के साथ विजेता की उदारता और अभिशाप के साथ पराजित जाति की विवशता का स्पष्ट संबंध लिखें।

2(घ). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।
प्रश्न (घ): कैसा युद्ध धर्म के विरुद्ध माना गया है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में युद्ध के उद्देश्य के आधार पर उसके धर्मसंगत या अधर्मपूर्ण होने का निर्णय है।
- लोभ तथा दूसरे की संपत्ति छीनने की इच्छा क्षात्र धर्म के विरुद्ध है।

चरण 1: युद्ध का अनुचित उद्देश्य कवि स्पष्ट कहता है कि पराया धन या संपत्ति हड़पने की वृत्ति से की गई लड़ाई धर्म के विरुद्ध है। ऐसे युद्ध का आधार न्याय की रक्षा नहीं, बल्कि लालच और स्वार्थ होता है।

चरण 2: पद्यांश से समर्थन पंक्ति 'लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है' इस विचार को सीधे प्रकट करती है। वीरता का अर्थ अपनी शक्ति से निर्बल का अधिकार छीनना नहीं है; कवि अन्याय के प्रतिकार को ही उचित मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोभवश दूसरों की संपत्ति और अधिकार छीनने के लिए किया गया युद्ध क्षात्र धर्म के विरुद्ध माना गया है।

त्वरित सुझाव: किस प्रकार का युद्ध पूछा जाए तो उसके उद्देश्य पर ध्यान दें : यहाँ निर्णायक शब्द लोभ और परस्व हरना हैं।

2(ङ). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।
प्रश्न (ङ): भाव स्पष्ट कीजिए – 'पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मयुद्ध का आशय न्याय और सम्मान की रक्षा के लिए किया गया संघर्ष है।
- पौरुष की जागृति से तात्पर्य अन्याय के विरोध में साहस का जागना है।

चरण 1: पौरुष की जागृति जब चोट और अन्याय सहने वाला व्यक्ति अपने साहस तथा आत्मसम्मान को पहचानकर प्रतिकार के लिए उठ खड़ा होता है, तब उसके पौरुष की जागृति होती है। कवि ने इसे चोट खाए सिंह के जागने के बिंब से स्पष्ट किया है।

चरण 2: धर्मयुद्ध से संबंध ऐसा संघर्ष लोभ या दूसरों की संपत्ति हड़पने के लिए नहीं होता। उसका उद्देश्य अन्याय को रोकना और अपने सम्मान की रक्षा करना है। न्यायपूर्ण उद्देश्य से जागा यह साहस ही संघर्ष को धर्मयुद्ध की गरिमा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्याय और अपमान के विरुद्ध आत्मसम्मान की रक्षा के लिए साहसपूर्वक उठ खड़ा होना पौरुष की जागृति है; इसी न्यायपूर्ण प्रतिकार को कवि धर्मयुद्ध कहता है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में पौरुष का अर्थ साहस और धर्मयुद्ध का अर्थ न्याय की रक्षा बताते हुए दोनों के बीच संबंध स्पष्ट करें।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : कम्प्यूटर : मेरे जीवन में [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद एक केंद्रीय विषय पर विचारों का क्रमबद्ध और संक्षिप्त गद्य रूप है; इसकी भाषा स्पष्ट, शुद्ध और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।
- दिए गए विषय पर लगभग 150 शब्दों में भूमिका, विषय-विस्तार और सार्थक समापन को एक ही अनुच्छेद में जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: प्रथम पुरुष में अपना अनुभव लिखना विषय में मेरे जीवन का उल्लेख है, इसलिए अनुच्छेद में मैं और मेरे जैसे शब्दों से व्यक्तिगत अनुभव प्रस्तुत किए जाएँ। पढ़ाई, संपर्क और सृजनशीलता के उदाहरण विषय को स्पष्ट करते हैं। केवल उपकरणों की सूची देने के स्थान पर यह बताया जाए कि कम्प्यूटर दैनिक कार्यों में कैसे सहायता करता है।

चरण 2: लाभ और सावधानी का संतुलन आरंभ में कम्प्यूटर से अपना संबंध बताएँ। मध्य में अध्ययन, परियोजना और मनोरंजन के उपयोग रखें। अंत में समय की मर्यादा, स्वास्थ्य तथा निजी जानकारी की सुरक्षा पर विचार देकर स्पष्ट करें कि उपयोगकर्ता का विवेक ही तकनीक को उपयोगी बनाता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **कम्प्यूटर : मेरे जीवन में**

कम्प्यूटर मेरे जीवन का उपयोगी साथी बन गया है। पढ़ाई से लेकर मनोरंजन तक, वह अनेक कार्यों में मेरी सहायता करता है। विद्यालय में पढ़ाए गए कठिन विषयों को समझने के लिए मैं शैक्षिक वीडियो और डिजिटल पुस्तकों का उपयोग करता हूँ। परियोजना तैयार करना, जानकारी खोजना और सुंदर प्रस्तुति बनाना कम्प्यूटर से सरल हो जाता है। इसके माध्यम से मैं दूर रहने वाले संबंधियों से बातचीत भी कर सकता हूँ। चित्र बनाना और कहानी लिखना मेरी रचनात्मक रुचियों को विकसित करते हैं। फिर भी मैं समझता हूँ कि कम्प्यूटर का अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य और समय, दोनों को प्रभावित कर सकता है। इसलिए मैं स्क्रीन के सामने सीमित समय बिताता हूँ और खेलकूद तथा पुस्तकें पढ़ने को भी महत्त्व देता हूँ। इंटरनेट पर अपनी निजी जानकारी साझा नहीं करता और प्राप्त सूचना की सत्यता जाँचता हूँ। मेरे लिए कम्प्यूटर तभी लाभकारी है, जब उसका प्रयोग विवेक, अनुशासन और स्पष्ट उद्देश्य के साथ किया जाए।

चरण 4: निष्कर्ष यह अनुच्छेद विषय के प्रमुख पक्षों को स्पष्ट उदाहरणों और सार्थक समापन के साथ लगभग 150 शब्दों में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: पहले तीन मुख्य बिंदु चुनें, उन्हें एक ही अनुच्छेद में जोड़ें और अंत में शब्द-सीमा तथा वर्तनी जाँचें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : भारत की सामाजिक समस्याएँ [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद एक केंद्रीय विषय पर विचारों का क्रमबद्ध और संक्षिप्त गद्य रूप है; इसकी भाषा स्पष्ट, शुद्ध और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।
- दिए गए विषय पर लगभग 150 शब्दों में भूमिका, विषय-विस्तार और सार्थक समापन को एक ही अनुच्छेद में जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: समस्याओं को कारण और प्रभाव से जोड़ना अनुच्छेद में कुछ प्रमुख सामाजिक समस्याएँ चुनें और उनके प्रभाव स्पष्ट करें। अशिक्षा तथा गरीबी का संबंध बालश्रम से और लैंगिक असमानता का संबंध अवसरों की कमी से जोड़ा जा सकता है। अप्रमाणित आँकड़ों तथा किसी समुदाय के विरुद्ध आरोप से बचते हुए विषय का संतुलित विवेचन करें।

चरण 2: व्यावहारिक समाधान की योजना आरंभ में भारत की सामाजिक स्थिति का परिचय दें। मध्य में जातिगत भेदभाव, दहेज, अशिक्षा और बालश्रम जैसी बाधाएँ रखें। अंतिम भाग में शिक्षा, समान व्यवहार, कानून और नागरिक सहयोग के उपाय दें। अनुच्छेद एक ही प्रवाह में रहे और अंत सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना से हो।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **भारत की सामाजिक समस्याएँ**

भारत विविधताओं और समृद्ध परंपराओं का देश है, फिर भी अनेक सामाजिक समस्याएँ उसकी प्रगति में बाधा बनती हैं। जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, दहेज, अशिक्षा और बालश्रम आज भी लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। गरीबी के कारण अनेक बच्चे शिक्षा से दूर रह जाते हैं और कम आयु में काम करने लगते हैं। लड़कियों को समान अवसर न मिलना पूरे समाज की प्रतिभा को सीमित करता है। इन समस्याओं का समाधान केवल कानून बनाने से नहीं होगा; सामाजिक सोच में बदलाव भी आवश्यक है। परिवार में समानता का व्यवहार, विद्यालयों में संवेदनशील शिक्षा और समुदाय की सक्रिय भागीदारी परिवर्तन ला सकती है। हमें दहेज का विरोध करना चाहिए, जाति के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए और बच्चों को विद्यालय पहुँचाने में सहयोग देना चाहिए। शिक्षित तथा जागरूक नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझते हैं। जब प्रत्येक व्यक्ति सम्मान और न्याय को व्यवहार में अपनाएगा, तभी भारत अधिक समतामूलक और प्रगतिशील समाज बन सकेगा।

चरण 4: निष्कर्ष यह अनुच्छेद विषय के प्रमुख पक्षों को स्पष्ट उदाहरणों और सार्थक समापन के साथ लगभग 150 शब्दों में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: पहले तीन मुख्य बिंदु चुनें, उन्हें एक ही अनुच्छेद में जोड़ें और अंत में शब्द-सीमा तथा वर्तनी जाँचें।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वाभिमान अपने व्यक्तित्व, श्रम और मूल्यों के प्रति सम्मान है; अभिमान दूसरों को अपने से हीन समझने की प्रवृत्ति है।
- विचारात्मक अनुच्छेद में विषय का परिचय, दोनों प्रवृत्तियों का अंतर, व्यवहार से उदाहरण और स्पष्ट निष्कर्ष एक सूत्र में जुड़े रहने चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति अनुच्छेद का केंद्रीय विचार यह रखें कि आत्मसम्मान और विनम्रता साथ रह सकते हैं। पहले स्वाभिमान का अर्थ स्पष्ट करें, फिर अभिमान की हानि बताएँ और अंत में उचित व्यवहार सुझाएँ। विषय से संबंधित एक छोटा उदाहरण विचार को ठोस बनाता है। शीर्षक के बाद पूरा आदर्श उत्तर एक ही अनुच्छेद में लिखा गया है।

चरण 2: आदर्श अनुच्छेद **स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं**

स्वाभिमान मनुष्य के व्यक्तित्व का मूल्यवान गुण है। यह हमें अपने श्रम, विचारों और नैतिक मूल्यों का सम्मान करना सिखाता है। स्वाभिमानी व्यक्ति अन्याय के आगे नहीं झुकता, पर दूसरों को नीचा भी नहीं दिखाता। इसके विपरीत अभिमान अपनी योग्यता, संपत्ति या पद को श्रेष्ठता का प्रमाण मानता है। अभिमानी व्यक्ति दूसरों की सलाह ठुकराता है और अपनी भूल स्वीकार करने से बचता है। फलतः उसके संबंध बिगड़ते हैं तथा सीखने के अवसर घटते हैं। परीक्षा में सफलता पाने वाला विद्यार्थी यदि साथियों की सहायता करे, तो उसका आत्मविश्वास स्वाभिमान है; यदि वह उनका उपहास करे, तो वही सफलता अभिमान बन जाती है। हमें अपनी उपलब्धियों पर संतोष अवश्य होना चाहिए, किंतु उनमें परिवार, शिक्षकों और समाज के योगदान को भी पहचानना चाहिए। विनम्रता आत्मसम्मान को कमजोर नहीं करती, बल्कि उसे गरिमा देती है। इसलिए दृढ़ता से अपने अधिकारों की रक्षा करते हुए प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करना ही सच्चे स्वाभिमान की पहचान है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वाभिमान व्यक्ति को गरिमा और नैतिक साहस देता है। अपनी योग्यता पर विश्वास रखते हुए दूसरों का आदर करना चाहिए; यही अनुच्छेद का केंद्रीय संदेश है।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले स्वाभिमान और अभिमान का एक-एक व्यवहारगत उदाहरण सोचें; इससे दोनों का अंतर स्पष्ट रहेगा और अनुच्छेद विषय पर केंद्रित रहेगा।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : विकास के लिए शिक्षा आवश्यक [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिक्षा व्यक्ति की समझ, कौशल और जिम्मेदार नागरिकता विकसित करके व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास का आधार बनती है।
- विचारात्मक अनुच्छेद में शिक्षा और विकास का संबंध कारणों व उदाहरणों से स्पष्ट करते हुए विषयानुकूल निष्कर्ष देना आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति आरंभ में विकास का व्यापक अर्थ स्पष्ट करें। फिर शिक्षा से मिलने वाले ज्ञान, रोजगार, स्वास्थ्य-संबंधी जागरूकता और समानता को विकास से जोड़ें। अंत में सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता रखें। लगभग 150 शब्दों के आदर्श उत्तर को शीर्षक के नीचे एक ही अनुच्छेद में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 2: आदर्श अनुच्छेद **विकास के लिए शिक्षा आवश्यक**

किसी देश का विकास केवल ऊँची इमारतों और चौड़ी सड़कों से नहीं मापा जा सकता। उसका वास्तविक आधार जागरूक, कुशल और संवेदनशील नागरिक होते हैं। ऐसे नागरिक तैयार करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा मनुष्य को सही और गलत का विवेक देती है तथा समस्याओं का समाधान खोजना सिखाती है। शिक्षित किसान उन्नत कृषि-विधियाँ अपनाता है, प्रशिक्षित कर्मचारी उत्पादन बढ़ाता है और जागरूक नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझता है। शिक्षा स्वास्थ्य, स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी विकसित करती है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा परिवार की स्थिति सुधारती है और सामाजिक असमानता घटाने में सहायक होती

है। किंतु केवल प्रमाणपत्र प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। शिक्षा में व्यावहारिक कौशल, वैज्ञानिक दृष्टि, नैतिक मूल्य और सहयोग की भावना भी शामिल होनी चाहिए। सरकार और समाज को सुनिश्चित करना चाहिए कि आर्थिक कठिनाई किसी बच्चे की पढ़ाई न रोके। सबके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध होगी, तभी विकास व्यापक और स्थायी बन सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष शिक्षा ज्ञान, कौशल और सामाजिक चेतना के माध्यम से विकास को स्थायी बनाती है। इसलिए समान अवसरों वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विकास की आवश्यक शर्त है।

त्वरित सुझाव: शिक्षा के लाभों की सूची भर न दें; प्रत्येक लाभ को रोजगार, स्वास्थ्य, समानता या नागरिक जिम्मेदारी जैसे विकास के किसी स्पष्ट पहलू से जोड़ें।

4(i). 'गाँव से मज़दूरों का पलायन' विषय पर लगभग 150 शब्दों में आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में सामाजिक समस्या के कारण, उसके प्रभाव और व्यावहारिक समाधान क्रमबद्ध ढंग से रखे जाते हैं। विषय के अनुकूल संक्षिप्त शीर्षक और स्पष्ट दृष्टिकोण आवश्यक हैं।
- गाँव से मज़दूरों का पलायन रोजगार, मजदूरी और बुनियादी सुविधाओं से जुड़ा प्रश्न है। लगभग 150 शब्दों के मुख्य आलेख में इन पक्षों का संतुलित विवेचन करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना पहले शीर्षक और लेखक का नाम दिया जाएगा। आरंभ में पलायन की समस्या का परिचय, मध्य में कृषि पर निर्भरता, अनियमित काम और शहरों के आकर्षण की चर्चा तथा अंत में स्थानीय रोजगार के उपाय रखे जाएँगे। कारण और समाधान का सीधा संबंध बना रहना चाहिए।

चरण 2: समस्या के दोनों पक्षों का ध्यान पलायन से मजदूर को आय का अवसर मिलता है, परंतु शहर में असुरक्षा और गाँव में श्रम की कमी भी उत्पन्न होती है। इसलिए मजदूरों को दोष देने के बजाय ऐसी ग्रामीण व्यवस्था का समर्थन उचित है जिसमें बाहर जाना विवशता के बजाय स्वतंत्र चुनाव हो। नीचे मुख्य आलेख लगभग 150 शब्दों में दिया गया है।

चरण 3: पूर्ण नमूना आलेख **गाँव से मज़दूरों का पलायन**

लेखक: अजय कुमार

भारत के अनेक गाँवों से मज़दूर रोजी-रोटी की तलाश में शहरों की ओर जा रहे हैं। खेती पर अत्यधिक निर्भरता, छोटी जोत, अनिश्चित वर्षा और सालभर काम न मिलना इसके प्रमुख कारण हैं। कम मजदूरी तथा शिक्षा और स्वास्थ्य की कमजोर सुविधाएँ भी उन्हें गाँव छोड़ने के लिए विवश करती हैं।

शहरों में रोजगार की आशा तो होती है, पर अक्सर उन्हें असुरक्षित काम, महँगा आवास और कठिन जीवन मिलता है। परिवारों का बिखराव बच्चों की पढ़ाई और बुजुर्गों की देखभाल को प्रभावित करता है। दूसरी ओर गाँवों में खेती के समय श्रमिकों की कमी बढ़ती है।

इस समस्या का समाधान गाँवों में सम्मानजनक आजीविका उपलब्ध कराने में है। रोजगार योजनाओं का प्रभावी संचालन, समय पर मजदूरी, सिंचाई, कौशल-प्रशिक्षण और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन आवश्यक है। स्थानीय उत्पादों को बाजार मिले तथा विद्यालय और स्वास्थ्य केंद्र बेहतर बनें। जब गाँव में सुरक्षित भविष्य मिलेगा, तब पलायन विवशता नहीं, व्यक्ति का स्वतंत्र विकल्प होगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस आलेख में ग्रामीण पलायन के कारण, मजदूरों और गाँव पर पड़ने वाले प्रभाव तथा स्थानीय रोजगार और सुविधाओं पर आधारित समाधान प्रस्तुत हैं। शीर्षक और लेखक-नाम सहित इसकी विषयवस्तु प्रश्न की अपेक्षा पूरी करती है।

त्वरित सुझाव: पहले कारण, फिर मजदूर और गाँव पर प्रभाव, अंत में उन्हीं कारणों से जुड़े समाधान लिखें; मुख्य आलेख लगभग 150 शब्दों में रखें।

4(ii). हाल ही में पढ़ी यात्रा-वृत्तांतों की किसी पुस्तक की संतुलित समीक्षा लगभग 150 शब्दों में लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संतुलित पुस्तक-समीक्षा केवल प्रशंसा या कथासार नहीं होती। इसमें पुस्तक और लेखक का परिचय, विषयवस्तु, शैली, विशेषताएँ, सीमाएँ तथा पाठकीय उपयोगिता का विवेचन होता है।
- यात्रा-वृत्तांत की समीक्षा में स्थानों के वर्णन के साथ यात्रियों के अनुभव, सामाजिक निरीक्षण और भाषा की प्रभावशीलता पर ध्यान दिया जाता है। उदाहरण के लिए राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'मेरी तिब्बत यात्रा' चुनी जा सकती है।

चरण 1: प्रारूप और समीक्षा की रूपरेखा शीर्षक के बाद समीक्षक का नाम दिया जाएगा। मुख्य समीक्षा में पहले पुस्तक और लेखक का परिचय, फिर यात्रा-अनुभवों तथा भाषा-शैली की विशेषताएँ, इसके बाद एक उचित सीमा और अंत में पुस्तक की उपयोगिता बताई जाएगी। प्रकाशक, मूल्य या संस्करण का अनुमान लगाना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: संतुलन और तथ्यपरकता 'मेरी तिब्बत यात्रा' में तिब्बत के जनजीवन और सांस्कृतिक परिवेश के प्रति लेखक की जिज्ञासा समीक्षा का आधार है। वर्णन की सूक्ष्मता को गुण मानते हुए विवरणों के कारण कहीं गति धीमी लगने की पाठकीय सीमा कही जा सकती है। किसी अप्रमाणित घटना या गढ़े हुए उद्धरण के स्थान पर पुस्तक की सामान्य और पहचानी विशेषताओं पर चर्चा करें।

चरण 3: पूर्ण नमूना समीक्षा **'मेरी तिब्बत यात्रा': अनुभव और ज्ञान की यात्रा**

समीक्षक: अजय कुमार

हाल में मैंने राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी तिब्बत यात्रा' पढ़ी। यह यात्रा-वृत्तांत तिब्बत को केवल सुंदर दृश्यों का प्रदेश नहीं, बल्कि जीवंत समाज और समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के रूप में सामने लाता है। लेखक की जिज्ञासा और कठिन परिस्थितियों में यात्रा करने का साहस पाठक को प्रभावित करते हैं।

पुस्तक में भौगोलिक परिवेश, स्थानीय जनजीवन, रीति-रिवाज और बौद्ध संस्कृति के प्रति गहरी रुचि दिखाई देती है। सूक्ष्म निरीक्षण के कारण वर्णन विश्वसनीय और ज्ञानवर्धक बनते हैं। भाषा में वर्णनात्मकता के साथ आत्मीयता है; इसलिए पाठक लेखक के अनुभवों से जुड़ पाता है। पुस्तक यात्रा को दूसरे समाजों को समझने का माध्यम बनाती है।

हालाँकि कुछ स्थलों पर विवरणों की अधिकता से कथन की गति धीमी लगती है। अपरिचित नामों और सांस्कृतिक संदर्भों को समझने के लिए अतिरिक्त ध्यान भी देना पड़ता है। फिर भी ये सीमाएँ पुस्तक का महत्त्व कम नहीं करतीं। यात्रा, इतिहास और संस्कृति में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह उपयोगी तथा विचारोत्तेजक पुस्तक है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत समीक्षा में पुस्तक का परिचय, विषयवस्तु, निरीक्षण और भाषा के गुण, विवरणों की अधिकता जैसी पाठकीय सीमा तथा उपयोगिता का निर्णय है। इस प्रकार समीक्षा संतुलित और प्रश्नानुकूल है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में पुस्तक और लेखक का सही नाम लिखकर दो गुण, एक तर्कसंगत सीमा और पाठकीय उपयोगिता अवश्य दें; केवल कथासार न लिखें।

---

5. 'महानगरों में आवास की समस्या' विषय पर लगभग 150 शब्दों में फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय का तथ्यपरक, रोचक और मानवीय प्रस्तुतीकरण है। इसमें सूचनाओं के साथ जीवन की अनुभूति और लेखक की संवेदनशील दृष्टि भी रहती है।
- प्रभावी शीर्षक, आकर्षक आरंभ, समस्या के कारण और प्रभाव तथा सार्थक समापन फ़ीचर को पूर्ण बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक में आवास के संकट और आम आदमी के सपने का संबंध उभारेंगे। आरंभ में रोज़मर्रा का दृश्य रखेंगे। फिर महानगरों की ओर पलायन, महँगी भूमि, बढ़ते किराए, तंग बस्तियों और लंबी यात्राओं का उल्लेख करेंगे। अंत में सस्ते आवास तथा नियोजित विकास का सुझाव देंगे। भाषा सहज और चित्रात्मक रहेगी। तथ्य और संवेदना के संतुलन से पाठक को

समस्या की गंभीरता का अनुभव कराएँगे।

चरण 2: पूर्ण मॉडल फ़ीचर **सपनों का शहर, छत की तलाश**

सुबह की पहली लोकल में ठुँसे चेहरों को देखिए। ये महानगर के सपनों को गति देते हैं, लेकिन इनमें कितनों के पास अपनी छत है? किसी का परिवार एक कमरे में सिमटा है, तो कोई फुटपाथ को ही घर मानता है।

रोज़गार, शिक्षा और बेहतर जीवन की उम्मीद गाँवों तथा कस्बों से लोगों को महानगर खींच लाती है। आबादी बढ़ती है, पर सस्ते मकान उसी अनुपात में नहीं बनते। भूमि की ऊँची कीमत और बढ़ता किराया आम आदमी की कमाई का बड़ा हिस्सा निगल लेते हैं। मजबूरी में लोग तंग, अस्वच्छ बस्तियों में रहते हैं या शहर से दूर बसकर रोज़ लंबी यात्रा करते हैं। बच्चों के खेलने और पढ़ने की जगह भी सिकुड़ जाती है।

समाधान केवल ऊँची इमारतें नहीं हैं। किफ़ायती आवास, आवश्यक सुविधाएँ, बेहतर सार्वजनिक परिवहन और छोटे शहरों में रोज़गार बढ़ाना ज़रूरी है। महानगर तभी सचमुच महान होगा, जब उसके निर्माताओं को भी सम्मानजनक छत मिलेगी।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर आवास की समस्या को मानवीय दृश्य से जोड़ता है और उसके कारणों, प्रभावों तथा व्यावहारिक समाधान को लगभग 150 शब्दों के मॉडल में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर शुरू करते समय कोई परिचित दृश्य चुनें; उसी से समस्या खोलें और अंत को आरंभ की छवि से जोड़ें।

6(क). 'पेज थ्री पत्रकारिता' का आशय समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में विषय और प्रस्तुति के आधार पर समाचारों की अलग-अलग प्रवृत्तियाँ होती हैं।
- पेज थ्री पत्रकारिता का संबंध मुख्यतः चर्चित लोगों के सामाजिक जीवन और मनोरंजन जगत की गतिविधियों से है।

चरण 1: अर्थ स्पष्ट करें पेज थ्री पत्रकारिता में फ़िल्मी सितारों, फैशन जगत और उच्चवर्गीय समाज की पार्टियों, समारोहों तथा निजी जीवन से जुड़ी खबरें प्रमुखता से प्रकाशित होती हैं।

चरण 2: नाम और प्रकृति समझें ऐसी सामग्री को अनेक समाचारपत्रों के तीसरे पृष्ठ पर स्थान मिलने से यह नाम प्रचलित हुआ। इसका उद्देश्य पाठकों को चर्चित हस्तियों की जीवनशैली और सामाजिक गतिविधियों से परिचित कराना होता है।

चरण 3: निष्कर्ष पेज थ्री पत्रकारिता चर्चित हस्तियों, मनोरंजन, फैशन और उच्चवर्गीय सामाजिक आयोजनों पर केंद्रित पत्रकारिता है।

त्वरित सुझाव: पेज थ्री की पहचान के लिए सितारों, पार्टियों और जीवनशैली की खबरों को याद रखें।

6(ख). अंशकालिक पत्रकार किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके कार्य के समय और नियुक्ति की प्रकृति के आधार पर भी होता है।
- अंशकालिक पत्रकार सीमित समय में समाचार जुटाने और भेजने का काम करता है।

चरण 1: परिभाषा दें जो पत्रकार किसी समाचार संस्था के लिए पूर्णकालिक रूप से काम न करके सीमित समय में समाचार-संग्रह और लेखन करता है, उसे अंशकालिक पत्रकार कहते हैं।

चरण 2: कार्य की स्थिति समझें वह संस्था से जुड़ा रहकर अपने क्षेत्र की खबरें भेज सकता है और साथ में कोई अन्य कार्य भी कर सकता है। उसका प्रमुख भेद कम समय की सेवाएँ देना है; उसे केवल शौकिया लेखक या नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी नहीं समझना

चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष अंशकालिक पत्रकार वह है जो किसी समाचार संस्था के लिए सीमित समय में पत्रकारिता का कार्य करता है।

त्वरित सुझाव: अंशकालिक का अर्थ समझाते समय समय की सीमित भागीदारी बताएँ; केवल स्वतंत्र लेखन कहना पर्याप्त नहीं है।

6(ग). विशेषीकृत पत्रकारिता को संक्षेप में समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी विशिष्ट विषय की पत्रकारिता में सामान्य सूचना के अतिरिक्त विषय का गहरा ज्ञान आवश्यक होता है।
- विशेषीकृत पत्रकारिता पाठक को विषय की पृष्ठभूमि, तथ्य और प्रभाव समझाती है।

चरण 1: परिभाषा बताएँ जब पत्रकार किसी विशेष क्षेत्र या विषय की जानकारी और विशेषज्ञता के आधार पर समाचार, विश्लेषण तथा लेख प्रस्तुत करता है, तो उसे विशेषीकृत पत्रकारिता कहते हैं।

चरण 2: उदाहरण से स्पष्ट करें विज्ञान, अर्थव्यवस्था, खेल, पर्यावरण और स्वास्थ्य इसके प्रमुख क्षेत्र हैं। उदाहरणतः आर्थिक पत्रकार बजट की सूचना देने के साथ उसके सामान्य लोगों पर पड़ने वाले प्रभाव को भी समझाता है। इसमें विषयज्ञान और तथ्य-जाँच आवश्यक हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विशेषीकृत पत्रकारिता किसी खास विषय के गहरे ज्ञान पर आधारित सूचना, विवेचन और विश्लेषण की पत्रकारिता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के साथ विज्ञान या आर्थिक पत्रकारिता का एक उदाहरण देकर विषयगत विशेषज्ञता स्पष्ट करें।

6(घ). 'बीट' से आप क्या समझते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार संस्थाएँ नियमित समाचार-संग्रह के लिए संवाददाताओं में क्षेत्रों और विषयों का बँटवारा करती हैं।
- बीट का संबंध संवाददाता को सौंपे गए निर्धारित समाचार क्षेत्र से है।

चरण 1: बीट का अर्थ बताएँ पत्रकारिता में बीट वह निश्चित क्षेत्र, विभाग या विषय है जिसकी खबरें जुटाने की नियमित जिम्मेदारी किसी संवाददाता को दी जाती है।

चरण 2: उदाहरण और दायित्व समझें शिक्षा, पुलिस, न्यायालय और राजनीति अलग-अलग बीट हो सकती हैं। शिक्षा बीट का संवाददाता विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और शिक्षा विभाग की खबरों पर नियमित नज़र रखता है तथा संबंधित स्रोतों से संपर्क बनाए रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष बीट संवाददाता को नियमित समाचार-संग्रह के लिए सौंपा गया निश्चित विषय, विभाग या क्षेत्र है।

त्वरित सुझाव: बीट को केवल भौगोलिक इलाका न लिखें; पुलिस या शिक्षा जैसे विषयगत क्षेत्र का उदाहरण भी दें।

6(ङ). रेडियो की लोकप्रियता के क्या कारण हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो एक श्रव्य जनसंचार माध्यम है; इसकी सामग्री सुनकर ग्रहण की जाती है।
- सरल उपलब्धता, व्यापक पहुँच और काम करते हुए सुनने की सुविधा इसे लोकप्रिय बनाती है।

चरण 1: सुलभता और पहुँच बताएँ रेडियो अपेक्षाकृत सस्ता और आसानी से उपलब्ध माध्यम है। इसे सुनने के लिए पढ़ा-लिखा होना आवश्यक नहीं है। इसकी पहुँच दूरदराज़ क्षेत्रों तक है और प्रसारण श्रोताओं को तुरंत सूचना दे सकता है।

चरण 2: सुविधा और विविधता जोड़ें श्रोता दूसरे काम करते हुए भी समाचार, संगीत और उपयोगी कार्यक्रम सुन सकते हैं। सरल बोलचाल की भाषा तथा स्थानीय भाषाओं में प्रसारण अलग-अलग समुदायों को जोड़ते हैं। ध्वनि और आवाज़ का आत्मीय प्रभाव भी इसकी लोकप्रियता बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कम लागत, व्यापक पहुँच, निरक्षर लोगों के लिए उपयोगिता तथा काम करते हुए सुनने की सुविधा रेडियो की लोकप्रियता के मुख्य कारण हैं।

त्वरित सुझाव: रेडियो के उत्तर में सस्ता, सुगम, श्रव्य और साथ-साथ काम करने की सुविधा जैसे सीधे कारण लिखें।

7. दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक को नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह करते हुए लगभग 150 शब्दों में पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, निवेदन और हस्ताक्षर का क्रम रखा जाता है।
- आग्रह का केंद्र नवीन साहित्यिक रचनाओं का प्रसारण है; उसके लाभ और कार्यक्रम का उपयोगी स्वरूप स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-विन्यास पहले अपना पता और दिनांक लिखें। इसके बाद दूरदर्शन केंद्र के निदेशक का पद एवं पता और स्पष्ट विषय दें। मुख्य भाग में साहित्यिक कार्यक्रम की आवश्यकता बताएँ, नई रचनाओं को स्थान देने का सुझाव दें तथा विनम्र आग्रह के साथ पत्र समाप्त करें। भाषा शिष्ट, संक्षिप्त और विषयानुकूल होनी चाहिए।

चरण 2: पत्र की सामग्री की योजना नवीन कविता, कहानी और निबंध को दर्शकों तक पहुँचाने का आग्रह किया जा सकता है। रचनाकार से बातचीत, रचना-पाठ और संक्षिप्त समीक्षा कार्यक्रम को रोचक बनाएँगे। युवा लेखकों की भागीदारी और विद्यार्थियों में पठन-रुचि का विकास प्रस्ताव के ठोस कारण हैं। लगभग 150 शब्दों में इन्हीं बातों को व्यवस्थित रूप से रखें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, विकास नगर,
नई दिल्ली।
दिनांक: 2 अप्रैल, 2018
सेवा में,
निदेशक महोदय,
दूरदर्शन केंद्र,
नई दिल्ली।
विषय: नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह।
महोदय,
मैं आपके लोकप्रिय माध्यम से नवीन साहित्यिक रचनाओं पर एक नियमित कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह करना चाहता हूँ। आज मनोरंजन के अनेक कार्यक्रम उपलब्ध हैं, किंतु समकालीन साहित्य से परिचित कराने वाले कार्यक्रम अपेक्षाकृत कम हैं।
इस कार्यक्रम में नई कविताओं, कहानियों और निबंधों का पाठ तथा उनकी संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत की जा सकती है। रचनाकारों से

बातचीत दर्शकों को उनकी सृजन-प्रक्रिया और सामाजिक सरोकारों से परिचित कराएगी। विभिन्न भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं के हिंदी अनुवाद भी इसमें शामिल किए जाएँ। युवा और नवोदित लेखकों को अवसर मिलने से उनका उत्साह बढ़ेगा तथा विद्यार्थियों में पढ़ने की रुचि विकसित होगी।
कृपया इसे साप्ताहिक कार्यक्रम के रूप में उपयुक्त समय पर प्रसारित करने पर विचार करें। दर्शकों के प्रश्न और सुझाव शामिल करने से यह कार्यक्रम अधिक उपयोगी बन सकेगा। आशा है, आप इस निवेदन पर सकारात्मक निर्णय लेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार।

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में नवीन साहित्यिक रचनाओं के नियमित प्रसारण का विनम्र आग्रह, उसका प्रस्तावित स्वरूप और दर्शकों को होने वाले लाभ स्पष्ट किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: पत्र के विषय में ही नवीन साहित्यिक रचनाओं के प्रसारण का आग्रह लिखें; मुख्य भाग में उसी प्रस्ताव के ठोस लाभ दें।

8(क). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
प्रश्न (क): छोटे खेत और काग़ज़ का रूपक समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय और उपमान का भेद मिटाकर दोनों को एक मान लिया जाता है।
- यहाँ खेती की प्रक्रिया के माध्यम से काग़ज़ पर कविता रचने की प्रक्रिया समझाई गई है।

चरण 1: खेत और काग़ज़ का संबंध कवि ने काग़ज़ के चौकोर पन्ने को अपना छोटा खेत कहा है। किसान खेत में बीज बोकर फसल उगाता है; उसी प्रकार कवि काग़ज़ पर अपने भाव और विचारों को शब्दों में ढालकर रचना करता है। इसलिए काग़ज़ सृजन की भूमि है।

चरण 2: रूपक का विस्तार काग़ज़ को खेत के समान कहने के स्थान पर उसे सीधे खेत माना गया है। भाव या प्रेरणा का बीज कल्पना के पोषण से शब्दों के अंकुर और पल्लव-पुष्प बनता है। इस प्रकार खेत की उपज और कवि की रचना के बीच अभेद स्थापित होता है। काग़ज़ छोटा होने पर भी उसमें उपजी कविता का भाव-संसार व्यापक हो सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटा चौकोना खेत काग़ज़ का पन्ना है, जिसमें कवि भावों का बीज बोकर शब्दों की फसल अर्थात कविता रचता है; यही दोनों का रूपक-संबंध है।

त्वरित सुझाव: रूपक समझाते समय काग़ज़ को सृजन-भूमि और कविता को उसकी उपज बताकर दोनों के बीच अभेद स्पष्ट करें।

8(ख). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
प्रश्न (ख): रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' से आप क्या समझते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में अंधड़ और बीज कृषि-जगत के बिंब हैं, जिनसे कवि की रचनात्मक अनुभूति व्यक्त होती है।
- इनका अर्थ बाहरी घटना से उठने वाले भावावेग और उससे जन्मे सृजनात्मक विचार के संदर्भ में करना चाहिए।

चरण 1: अंधड़ का आशय अंधड़ से आशय अचानक उठने वाले तीव्र भावावेग या प्रेरणा के झोंके से है। कोई अनुभव, घटना या विचार कवि के मन को झकझोर देता है। जैसे अंधड़ शांत वातावरण में हलचल पैदा करता है, वैसे ही यह अनुभूति मन में सृजन की हलचल उत्पन्न करती है।

चरण 2: बीज का आशय बीज उस क्षण जन्मा मूल भाव, विचार या अनुभूति है, जिसमें भावी कविता की संभावना छिपी होती है। यह तैयार कविता नहीं है। कल्पना और संवेदना से पोषित होकर यही सूक्ष्म प्रेरणा शब्दों में विकसित होती है। इसलिए क्षण का बीज रचना के आरंभिक बिंदु को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंधड़ तीव्र भावावेग या अचानक मिली प्रेरणा है और बीज उस प्रेरक क्षण से जन्मा मूल भाव-विचार है, जिससे आगे कविता विकसित होती है।

त्वरित सुझाव: अंधड़ को भावों की हलचल और बीज को रचना के मूल विचार से जोड़ें; दोनों को तैयार कविता का पर्याय न बनाएँ।

8(ग). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
प्रश्न (ग): कल्पना को रसायन क्यों कहा गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने कविता के विकास को बीज से पौधा बनने की प्रक्रिया द्वारा व्यक्त किया है।
- कल्पना मूल अनुभूति को नया रूप, विस्तार और कलात्मक अभिव्यक्ति देती है।

चरण 1: रसायन का पोषणकारी काम जैसे पोषक रसायन बीज को विकसित होकर अंकुरित होने में सहायता देते हैं, वैसे ही कल्पना

कवि की अनुभूति को पोषित करती है। केवल कोई घटना देख लेना कविता नहीं बन जाता। कल्पना उस अनुभव में नए संबंध, चित्र और भाव-संभावनाएँ खोजती है।

चरण 2: रचना में रूपांतरण कल्पना के प्रभाव से मूल भाव का अलग अस्तित्व मिटकर वह शब्दों, बिंबों और लय के रूप में व्यक्त होता है। इसी को बीज के गलने और शब्दों के अंकुर फूटने से समझाया गया है। रसायन की तरह कल्पना भी रूपांतरण करती है; वह साधारण अनुभव को सुंदर, प्रभावशाली और अर्थपूर्ण काव्य-रचना बना देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कल्पना को रसायन इसलिए कहा गया है कि वह अनुभूति-रूपी बीज को पोषण देकर उसका कलात्मक रूपांतरण करती है और उससे शब्दों तथा भावों की कविता विकसित होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कल्पना के दो काम स्पष्ट करें: अनुभूति को पोषण देना और उसे कलात्मक शब्द-रूप में बदलना।

8(घ). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
प्रश्न (घ): 'पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस पंक्ति में काव्य-रचना की तुलना पल्लवों और फूलों से समृद्ध पौधे से की गई है।
- भाव, भाषा और सौंदर्य मिलकर प्रारंभिक अनुभूति को पूर्ण कविता में बदलते हैं।

चरण 1: रूपक के संकेत समझिए काग़ज़ का पन्ना खेत है और किसी क्षण की अनुभूति उसमें पड़ा बीज है। कवि की कल्पना उस अनुभूति को विकसित करती है। इसके बाद शब्दों के अंकुर फूटते हैं और रचना आकार ग्रहण करती है। अत: पल्लव और पुष्प का अर्थ यहाँ खेत में उगे वास्तविक पत्ते और फूल नहीं, कविता का विकास और सौंदर्य है।

चरण 2: पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए जिस प्रकार पत्तों और फूलों से लदा पौधा झुक जाता है, उसी प्रकार कवि की रचना सुंदर शब्दों, भावों तथा कलात्मक अभिव्यक्ति से समृद्ध हो जाती है। छोटी-सी अनुभूति कल्पना के संसर्ग से ऐसी विशेष कविता बनती है जिसमें भावों की संपन्नता और सौंदर्य भर जाता है। "नमित" शब्द इसी समृद्धि से झुकने का बिंब प्रस्तुत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का भाव है कि कल्पना से विकसित कविता सुंदर शब्दों, गहन भावों और कलात्मक सौंदर्य से भरकर पल्लव-पुष्पों से लदे पौधे जैसी समृद्ध हो जाती है।

त्वरित सुझाव: खेत के रूपक में पल्लव-पुष्पों को कविता के भाव और कलात्मक सौंदर्य से जोड़कर उत्तर लिखें।

अथवा

8(क). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
(अथवा) प्रश्न (क): किसके बच्चों की बात की गई है, वे नीड़ों से क्यों झाँक रहे हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नीड़ पक्षियों का घोंसला है; बच्चों की प्रत्याशा माता-पक्षी के लौटने से जुड़ी है।
- प्रतीक्षा के प्रसंग को चिड़ियों के परों की चंचलता से जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: बच्चों की पहचान कीजिए काव्यांश में चिड़ियों के बच्चों की बात की गई है। "नीड़ों से झाँक रहे होंगे" से स्पष्ट है कि ये घोंसलों में रहने वाले पक्षी-शावक हैं। चिड़ियाँ बाहर हैं और संध्या होने पर अपने घोंसलों की ओर लौट रही हैं। इसलिए यहाँ मनुष्य के बच्चों का प्रसंग नहीं है।

चरण 2: झाँकने का कारण बताइए बच्चे अपनी माँ के लौटने की उत्सुकता में घोंसलों से बाहर झाँक रहे हैं। वे माँ से मिलने तथा उसके लाए भोजन को पाने की आशा रखते हैं। दिन ढलने के साथ उनकी प्रतीक्षा और बढ़ती है। इसी आतुर प्रतीक्षा का ध्यान आते ही चिड़ियों के पंखों में तेजी भर जाती है और वे शीघ्र अपने बच्चों तक पहुँचना चाहती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ चिड़ियों के बच्चों का उल्लेख है। वे अपनी माँ के लौटने, उससे मिलने और भोजन पाने की आशा में घोंसलों से झाँक रहे हैं।

त्वरित सुझाव: बच्चों की पहचान के लिए "नीड़" और प्रतीक्षा का कारण बताने के लिए माँ की घर-वापसी पर ध्यान दें।

8(ख). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
(अथवा) प्रश्न (ख): चिड़ियों की उड़ान में गति आने और कवि के शिथिल क़दमों के क्या कारण हो सकते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रियजनों से मिलने की आशा उत्साह और गति पैदा करती है।

- प्रतीक्षा करने वाले के अभाव की अनुभूति व्यक्ति को उदास और शिथिल बनाती है।

चरण 1: चिड़ियों की गति का कारण चिड़ियाँ सोचती हैं कि उनके बच्चे घोंसलों में उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। बच्चों के प्रति ममता तथा उनसे मिलने की आतुरता उनके परों में चंचलता भर देती है। दिन जल्दी ढल रहा है, इसलिए वे अँधेरा होने से पहले बच्चों के पास पहुँचना चाहती हैं। घर पर प्रतीक्षा करने वालों की कल्पना उनकी उड़ान तेज कर देती है।

चरण 2: कवि के शिथिल कदमों का कारण इसके विपरीत कवि के मन में प्रश्न उठता है कि उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल है। उसे अपने लिए किसी आत्मीय की प्रतीक्षा का अनुभव नहीं होता। यह अकेलेपन और आत्मीय संबंधों के अभाव का बोध उसके मन को दुख से भर देता है। जब लौटने की खुशी और मिलने की उत्कंठा ही नहीं है, तब उसके कदमों का उत्साह घट जाता है और गति शिथिल हो जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों से मिलने की ममता और उनकी प्रतीक्षा का ध्यान चिड़ियों की उड़ान तेज करता है; अपने लिए प्रतीक्षारत आत्मीय के अभाव का बोध कवि के कदम शिथिल कर देता है।

त्वरित सुझाव: दोनों के कारण साथ लिखें: चिड़ियों के लिए मिलने की आशा, कवि के लिए अकेलेपन की निराशा।

8(ग). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
(अथवा) प्रश्न (ग): कवि अपने आप से क्या प्रश्न करता है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मप्रश्न के माध्यम से कवि अपने जीवन में आत्मीय संबंधों का अभाव व्यक्त करता है।
- चिड़ियों की उत्सुकता कवि को अपनी स्थिति पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

चरण 1: कवि के प्रश्न पहचानिए कवि अपने आप से पूछता है, "मुझसे मिलने को कौन विकल?" और "मैं होऊँ किसके हित चंचल?" अर्थात उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल है और वह किससे मिलने के लिए उत्साहपूर्वक कदम बढ़ाए। ये प्रश्न उसके अपने जीवन तथा घर लौटने के उद्देश्य से जुड़े हैं।

चरण 2: प्रश्नों का कारण समझिए चिड़ियों को अपने बच्चों की प्रतीक्षा याद आने से घर लौटने की जल्दी होती है। उन्हें देखकर कवि अपनी स्थिति पर विचार करता है। उसे लगता है कि उसकी राह देखने वाला और उससे मिलने को व्याकुल कोई आत्मीय नहीं है। इसी अकेलेपन और आत्मीयता के अभाव से उसके मन में ये प्रश्न उठते हैं। उत्तर न मिलने की पीड़ा उसके कदम धीमे करती है और हृदय को विह्वलता से भर देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि पूछता है कि उससे मिलने को कौन व्याकुल है और वह किसके लिए उत्साहित हो। चिड़ियों के विपरीत अपने लिए किसी की प्रतीक्षा न अनुभव करने से वह ये प्रश्न करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कविता के दोनों आत्मप्रश्न लिखकर उन्हें कवि के अकेलेपन से जोड़ना न भूलें।

8(घ). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
(अथवा) प्रश्न (घ): 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – कथन की आवृत्ति क्या संकेत करती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आवृत्ति कविता में केंद्रीय भाव को उभारती है तथा लय उत्पन्न करती है।
- समय का निरंतर बीतना अलग-अलग मन:स्थितियों में अलग प्रभाव उत्पन्न करता है।

चरण 1: आवृत्ति का सामान्य संकेत "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" की आवृत्ति समय के निरंतर और तेजी से बीतने का बोध कराती है। संध्या का निकट आना बताता है कि उपलब्ध समय सीमित है। इस पंक्ति के बार-बार आने से ढलते दिन का दृश्य तथा समय के हाथ से निकलने की अनुभूति पाठक के मन में गहरी होती है।

चरण 2: प्रसंग में भाव स्पष्ट कीजिए चिड़ियों के लिए ढलता दिन बच्चों के पास जल्दी पहुँचने की प्रेरणा बनता है। उनके मन में मिलन की उत्सुकता है। कवि के लिए वही ढलता दिन अकेलेपन और उदासी को तीव्र करता है, क्योंकि उसे किसी की प्रतीक्षा का सहारा नहीं मिलता। इस प्रकार आवृत्ति समय की गति के साथ मिलन की आशा और एकाकी मन की विह्वलता को उभारती है तथा गीत में लय भी पैदा करती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन की आवृत्ति समय की तीव्र, निरंतर गति और उपलब्ध समय की सीमितता का संकेत करती है। यह चिड़ियों की मिलन-उत्कंठा तथा कवि के अकेलेपन को अधिक प्रभावी बनाती है।

त्वरित सुझाव: आवृत्ति का उत्तर केवल लय तक सीमित न रखें; समय की गति और दोनों मन:स्थितियों का संकेत भी दें।

9(क). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (क): काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की टिप्पणी में शब्दावली, सहजता, लय तथा भाव व्यक्त करने की क्षमता देखी जाती है।
- घरेलू जीवन के शब्द और मुहावरे मातृत्व के दृश्य को सजीव बनाते हैं।

चरण 1: शब्दावली और भाषा का स्वरूप काव्यांश की भाषा सहज, सरल और बोलचाल के निकट है। इसमें हिंदी-उर्दू की मिली-जुली हिंदुस्तानी भाषा का स्वाभाविक रूप मिलता है। "आँगन", "गोद", "हाथों" और "बच्चे" जैसे परिचित शब्द घरेलू वातावरण रचते हैं। "पे" जैसे बोलचाल के प्रयोग तथा "लोका देती है" जैसा लोकप्रचलित क्रियापद अभिव्यक्ति में आत्मीयता लाते हैं।

चरण 2: भावाभिव्यक्ति और लय की विशेषता भाषा चित्रात्मक है: माँ का बच्चे को गोद में झुलाना और हवा में उछालना आँखों के

सामने आ जाता है। "चाँद के टुकड़े" जैसे मुहावरेदार प्रयोग से शिशु का सौंदर्य और माँ का प्यार व्यक्त होता है। "रह-रह" की पुनरावृत्ति और पंक्तियों का प्रवाह गीतात्मकता बढ़ाते हैं। इस प्रकार सहज शब्दों से वात्सल्य तथा बच्चे की खिलखिलाहट का जीवंत अनुभव मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सरल, बोलचाल की, मुहावरेदार और लयात्मक हिंदुस्तानी है। घरेलू तथा लोकप्रचलित शब्दों और चित्रात्मक अभिव्यक्ति से माँ-बच्चे का वात्सल्यपूर्ण दृश्य सजीव हुआ है।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के साथ काव्यांश का छोटा उदाहरण दें, जैसे बोलचाल के लिए "पे"।

9(ख). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (ख): काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता के केंद्रीय भाव तथा उसे सजीव बनाने वाले दृश्य का विवेचन किया जाता है।
- इस रुबाई में माँ का वात्सल्य और शिशु का निश्छल आनंद एक-दूसरे के पूरक हैं।

चरण 1: वात्सल्य का सजीव दृश्य काव्यांश में आँगन में खड़ी माँ अपने छोटे बच्चे को गोद में लिए हुए है। वह उसे हाथों पर झुलाती है और बार-बार हवा में उछालकर खिलाती है। इन सहज क्रियाओं में माँ का स्नेह, ममता और शिशु को प्रसन्न रखने की उत्कंठा प्रकट होती है। गोद में भरे बच्चे के कारण मातृत्व की पूर्णता और घरेलू जीवन की आत्मीयता भी उभरती है।

चरण 2: शिशु के आनंद और माँ के सुख का संबंध माँ के खिलाने पर बच्चा खिलखिलाकर हँस पड़ता है और उसकी हँसी आँगन में गूँज उठती है। इससे दृश्य केवल दिखाई ही नहीं देता, उसकी आनंदमय ध्वनि भी सुनाई पड़ती है। माँ की ममता का उत्तर बच्चे की निष्कपट हँसी से मिलता है। बच्चे को 'चाँद का टुकड़ा' कहना उसके सौंदर्य के साथ माँ की दृष्टि में उसके अत्यंत प्रिय होने को भी व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस काव्यांश का भाव-सौंदर्य माँ के सहज वात्सल्य, शिशु की निष्कलुष प्रसन्नता और दोनों के आत्मीय संबंध के सजीव चित्रण में निहित है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय माँ की क्रिया, बच्चे की प्रतिक्रिया और दोनों में व्यक्त प्रेम को आपस में जोड़िए।

9(ग). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (ग): प्रयुक्त आलंकारिक सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलंकार का उल्लेख उसके पाठगत उदाहरण और उससे उत्पन्न प्रभाव के साथ करना चाहिए।
- रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है; पुनरुक्तिप्रकाश में एक शब्द की आवृत्ति सौंदर्य बढ़ाती है।

चरण 1: रूपक और पुनरुक्तिप्रकाश की पहचान 'चाँद के टुकड़े' में बच्चे पर चाँद के टुकड़े का सीधा आरोप है, इसलिए रूपक अलंकार है। कवि ने बच्चे को चाँद जैसा कहकर तुलना नहीं की, बल्कि उसे चाँद का टुकड़ा ही कहा है। इससे बच्चे की सुंदरता, कोमलता तथा माँ के लिए उसका प्रिय होना प्रभावशाली ढंग से व्यक्त होता है। 'रह-रह' में एक ही शब्द की पुनरावृत्ति से पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है; इससे माँ द्वारा बच्चे को बार-बार उछालकर खिलाने की क्रिया उभरती है।

चरण 2: ध्वनि और दृश्य की सुंदरता 'खिलखिलाते बच्चे की हँसी' में हँसी का ध्वन्यात्मक रूप दृश्य को श्रव्य बना देता है। यह अभिव्यक्ति शिशु के निर्मल आनंद और आँगन के उल्लास को सजीव करती है। अलंकार यहाँ केवल सजावट नहीं हैं; वे वात्सल्य के भाव को मूर्त और अनुभवगम्य बनाते हैं। इस प्रकार रूपक बच्चे के सौंदर्य को तथा शब्द की आवृत्ति माँ की स्नेहपूर्ण क्रियाशीलता को उभारती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में 'चाँद के टुकड़े' का रूपक और 'रह-रह' का पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार प्रमुख हैं; ध्वन्यात्मक शब्दावली वात्सल्यपूर्ण दृश्य को अधिक सजीव बनाती है।

त्वरित सुझाव: अलंकार बताते हुए पहले सटीक शब्द उद्धृत कीजिए, फिर उसकी पहचान का कारण और भाव पर उसका प्रभाव लिखिए।

10(क). 'कविता के बहाने' कविता में कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बच्चे की मुक्त क्रीड़ा कविता की असीम रचनात्मक शक्ति को समझाने का माध्यम है।
- बालमन और काव्य-कल्पना दोनों सहजता, भेदभाव से मुक्ति और सीमाओं के अतिक्रमण से जुड़े हैं।

चरण 1: खेल और सृजन की सहजता बच्चे खेलते समय आनंद में डूब जाते हैं। उनका खेल बाहरी लाभ या किसी संकीर्ण प्रयोजन से संचालित नहीं होता। इसी प्रकार कविता का सृजन भी संवेदना, कल्पना और आनंद की सहज अभिव्यक्ति है। कविता में शब्दों के साथ रचनात्मक खेल होता है, जिससे नए अर्थ और अनुभव जन्म लेते हैं। इसीलिए कवि कविता की प्रकृति को बच्चे के खेल के समानांतर रखता है।

चरण 2: सीमाओं और भेदभाव का अतिक्रमण बच्चे खेल में अपने और पराए घर का भेद भूलकर सबको एक कर देते हैं। जाति, वर्ग या सामाजिक प्रतिष्ठा जैसी बड़ों की बनाई दीवारें उनके स्वाभाविक मेलजोल को संचालित नहीं करतीं। कविता भी मनुष्य को संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर व्यापक मानवीय अनुभव से जोड़ती है। उसमें भाषा, स्थान और समय की सीमाओं से आगे जाने की क्षमता होती है।

चरण 3: कल्पना की स्वतंत्रता और संभावना बालक की कल्पना किसी निश्चित सीमा में बंद नहीं होती; वह साधारण वस्तुओं और परिस्थितियों में भी नई दुनिया बना लेता है। कविता भी संभावित जगत की खोज करती है और परिचित अनुभव को नए अर्थ देती है। बच्चे का खेल और कविता का रचनात्मक संसार इसलिए विस्तार तथा नवीनता के प्रतीक हैं। दोनों को समानांतर रखने से कविता की जीवंत, उदार और असीम शक्ति स्पष्ट होती है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता और बच्चे को समानांतर रखने का कारण उनकी सहज आनंदमय सृजनशीलता, मुक्त कल्पना तथा अपने-पराए के भेद और बाहरी सीमाओं को पार कर सकने की समान क्षमता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को तीन सूत्रों में व्यवस्थित कीजिए: सहज खेल, भेदभाव से मुक्ति और कल्पना का असीम विस्तार।

10(ख). बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को 'बादल राग' कविता रेखांकित करती है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की 'बादल राग' में बादल प्रकृति में नया जीवन लाते हैं और क्रांतिकारी परिवर्तन के प्रतीक भी बनते हैं।
- प्रकृति के छोटे पौधों और ऊँचे वृक्षों की भिन्न प्रतिक्रियाओं से कविता का परिवर्तनकारी आशय स्पष्ट होता है।

चरण 1: आकाश और वातावरण में परिवर्तन बादलों के आगमन से आकाश में उनका घना विस्तार छा जाता है। उनकी गर्जना, बिजली की चमक और वर्षा से वातावरण में प्रबल हलचल उत्पन्न होती है। स्थिरता टूटती है और प्रकृति में गति तथा ऊर्जा का संचार होता है। कविता में बादलों का गर्जन केवल वर्षा की सूचना नहीं, व्यापक परिवर्तन के आगमन का संकेत भी है।

चरण 2: छोटे पौधों और वनस्पतियों में जीवन वर्षा पाकर धरती की वनस्पतियों को नया जीवन मिलता है। छोटे पौधे प्रसन्न होकर लहराते हैं और बादलों का स्वागत करते प्रतीत होते हैं। कविता में 'छोटे पौधे हँसते हैं' तथा 'हाथ हिलाते' जैसी अभिव्यक्तियाँ उनके उल्लास को मानवीय रूप देती हैं। जीवनदायी वर्षा उनकी वृद्धि और विकास की संभावना जगाती है; उनका आनंद अभावग्रस्त जन के लिए जागी आशा से भी जुड़ता है।

चरण 3: ऊँचे वृक्षों पर आघात और परिवर्तन का आशय बादलों के प्रचंड रूप और वज्रपात से बड़े वृक्षों के आहत होकर गिरने का चित्र भी आता है। इस प्रकार प्रकृति में परिवर्तन सबके लिए एक-सा नहीं है: छोटे पौधे जीवन पाकर हर्षित होते हैं, जबकि ऊँचे वृक्ष प्रचंड आघात सहते हैं। यह अंतर पुरानी शक्तिशाली व्यवस्था के हिलने और छोटे, वंचित जीवन के उभरने का प्रतीक बनता है। प्रकृति का दृश्य कविता के सामाजिक आशय से जुड़ जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष बादलों के आगमन से आकाश में गर्जना और बिजली की हलचल, वर्षा से वनस्पतियों में नवजीवन, छोटे पौधों में उल्लास तथा प्रचंड आघात से बड़े वृक्षों का पतन जैसे परिवर्तन दिखाई देते हैं।

त्वरित सुझाव: प्रकृति के वर्णन में छोटे पौधों की प्रसन्नता और ऊँचे वृक्षों पर प्रहार का अंतर अवश्य समझाइए।

10(ग). कवितावली से आपकी पाठ्य-पुस्तक में उद्धृत छंदों के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के उद्धृत छंद आजीविका के संकट, भूख और सामाजिक असमानता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।
- सोदाहरण उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग को उसके सामाजिक-आर्थिक अर्थ से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: आजीविका के साधनों का संकट तुलसीदास 'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख' कहकर अपने समय की बदहाली दिखाते हैं। किसान की खेती, व्यापारी का व्यापार और सेवक की चाकरी संकट में हैं। भिखारी को भी भीख नहीं मिलती। इस चित्र में समाज के अलग-अलग वर्गों के जीविका-साधन बाधित हैं। जीविकाविहीन लोग सोच और चिंता में पड़े हैं तथा एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। यह व्यापक आर्थिक संकट की गहरी समझ का प्रमाण है।

चरण 2: भूख की विवशता और मानवीय संबंधों पर प्रभाव कवि 'पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी' कहकर दिखाते हैं कि भूख मनुष्य को कितनी भयावह विवशता में डाल सकती है। पेट भरने के लिए लोग ऊँचे-नीचे कर्म और उचित-अनुचित कार्य करने को बाध्य होते हैं। यहाँ तक कि संतान बेचने की नौबत आती है। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि तुलसीदास गरीबी को केवल धन की कमी नहीं, मानवीय गरिमा और पारिवारिक संबंधों को तोड़ने वाली समस्या मानते हैं।

चरण 3: दरिद्रता का व्यापक सामाजिक अर्थ 'आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेट की' में भूख की आग को समुद्र की आग से भी अधिक प्रबल बताया गया है। यह अतिशयोक्तिपूर्ण कथन भूख की असह्य पीड़ा को मूर्त करता है। कवि ने श्रम करने वाले किसान, मजदूर, कलाकार और सेवक सहित अनेक वर्गों की दशा पर दृष्टि डाली है। अवसरों और साधनों के अभाव से पैदा असुरक्षा को उजागर करके वे आर्थिक विषमता के परिणामों को पहचानते हैं। उनका स्वर पीड़ित जन के प्रति करुण और संवेदनशील है।

चरण 4: निष्कर्ष उद्धृत छंदों में बेरोजगारी, किसान और व्यापारी की दुर्दशा, भूख की तीव्रता तथा संतान बेचने जैसी विवशता का चित्रण सिद्ध करता है कि तुलसीदास अपने युग की आर्थिक विषमताओं और उनके मानवीय परिणामों को भलीभाँति समझते थे।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक उदाहरण के बाद उसका अर्थ जोड़िए: जीविका का संकट, भूख की विवशता और मानवीय गरिमा का ह्रास।

11(क). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (क): 'बाज़ार में एक जादू है' कथन का क्या आशय है? यह जादू कैसे काम करता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में बाज़ार का जादू वस्तुओं के रंग, रूप और आकर्षक सजावट से उत्पन्न सम्मोहन है।
- उत्तर में जादू का आशय तथा आँखों से मन तक उसके पहुँचने की प्रक्रिया, दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: जादू का आशय बाज़ार में रखी वस्तुओं की चमक-दमक और सुंदर रूप मनुष्य को अपनी ओर खींचते हैं। यही आकर्षण बाज़ार का जादू कहलाता है। यहाँ जादू से किसी अलौकिक शक्ति का नहीं, वस्तुओं को देखकर उत्पन्न होने वाली खरीदने की लालसा का बोध होता है।

चरण 2: काम करने की प्रक्रिया यह जादू आँखों के रास्ते काम करता है। व्यक्ति आकर्षक सामान देखता है तो उसका रूप मन को लुभाता है। मन खाली होने पर अनेक वस्तुएँ उसे अपने उपयोग की लगने लगती हैं। जेब भरी हो तो यह इच्छा और प्रबल होती है तथा वह अनावश्यक सामान को भी जरूरी और आराम बढ़ाने वाला समझने लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू उसका दृश्य आकर्षण है, जो आँखों से मन तक पहुँचकर खरीदने की इच्छा जगाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले रूप-सौंदर्य का आकर्षण बताइए और फिर आँख, मन तथा खरीदने की इच्छा का क्रम स्पष्ट कीजिए।

11(ख). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (ख): इस जादू की मर्यादा क्या है? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चुंबक और लोहे की तुलना स्पष्ट करती है कि बाज़ार का आकर्षण हर मन पर समान रूप से प्रभाव नहीं डालता।
- गद्यांश में मन का खाली होना प्रभाव का आधार और भरी जेब उसका प्रभाव बढ़ाने वाली स्थिति है।

चरण 1: मर्यादा का अर्थ इस जादू की मर्यादा उसकी प्रभाव-सीमा है। जैसे चुंबक का आकर्षण लोहे पर चलता है, हर पदार्थ पर नहीं, वैसे ही बाज़ार का जादू भी उसी मन को अधिक प्रभावित करता है जो भीतर से खाली है और अपनी जरूरतों के संबंध में स्पष्ट नहीं है।

चरण 2: सीमा को स्पष्ट करना जिस व्यक्ति का मन अपनी वास्तविक आवश्यकताओं के ज्ञान और संतोष से भरा है, वह हर वस्तु के निमंत्रण को स्वीकार नहीं करता। वह सुंदर वस्तु देखकर भी उसकी उपयोगिता पर विचार कर सकता है। इसके विपरीत, खाली मन वस्तुओं की ओर खिंचता है। धन होना अकेला निर्णायक कारण नहीं, क्योंकि गद्यांश के अनुसार खाली जेब होने पर भी खाली मन पर जादू चल सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू खाली और असंयमित मन को लुभाता है; आवश्यकता-बोध से भरे मन पर उसका प्रभाव सीमित रहता है।

त्वरित सुझाव: चुंबक-लोहे की तुलना को मन की ग्रहणशीलता से जोड़िए; केवल जेब भरी होने को जादू की शर्त मत बनाइए।

11(ग). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (ग): मन ख़ाली होने का क्या अर्थ है? इसका परिणाम क्या होता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मन का खालीपन यहाँ आवश्यकता-बोध तथा आंतरिक संतोष के अभाव का संकेत है।
- गद्यांश कारण और परिणाम का संबंध दिखाता है: खाली मन, वस्तुओं का निमंत्रण और खरीद की बढ़ती इच्छा।

चरण 1: खाली मन का अर्थ मन खाली होने का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी जरूरतों को लेकर स्पष्ट नहीं है और उसके भीतर संतोष तथा विवेक का दृढ़ आधार नहीं है। इसका अर्थ केवल धन का अभाव या किसी क्षण विचार न होना नहीं है। ऐसा मन बाहरी चमक-दमक से आसानी से प्रभावित होता है।

चरण 2: परिणाम की व्याख्या खाली मन तक बाज़ार की अनेक वस्तुओं का निमंत्रण पहुँच जाता है। वस्तुओं को देखकर व्यक्ति के मन में यह भी लूँ, वह भी लूँ की इच्छा उठती है। हर सामान उसे आवश्यक और आराम बढ़ाने वाला जान पड़ता है। यदि उसी समय जेब भी भरी हो तो लालसा और तेज हो जाती है तथा वह वास्तविक जरूरत से आगे बढ़कर खरीदने को उतावला हो सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष खाली मन आवश्यकता-बोध और संतोष से रहित मन है; उसका परिणाम अनावश्यक वस्तुओं के प्रति आकर्षण और खरीद की लालसा है।

त्वरित सुझाव: खाली मन को खाली जेब से अलग समझाइए और उसके परिणाम में बढ़ती इच्छाओं तथा हर वस्तु जरूरी लगने का उल्लेख कीजिए।

11(घ). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (घ): मन पर जादू का असर कब और कैसे दिखाई देता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रभाव की अनुकूल अवस्था खाली मन है; भरी जेब इस अवस्था में खरीद की इच्छा को बल देती है।
- उत्तर के कब और कैसे पक्षों को अलग स्पष्ट करने से कारण तथा लक्षण दोनों सामने आते हैं।

चरण 1: प्रभाव कब होता है जब व्यक्ति का मन खाली हो और उसे अपनी वास्तविक जरूरतों का स्पष्ट बोध न हो, तब बाज़ार का जादू उस पर असर करता है। यदि जेब भी भरी हो तो उसका प्रभाव खूब होता है। फिर भी गद्यांश बताता है कि खाली जेब होने पर भी खाली मन वस्तुओं के आकर्षण से प्रभावित हो सकता है।

चरण 2: प्रभाव कैसे दिखता है बाज़ार की सुंदर वस्तुएँ आँखों के माध्यम से मन को लुभाती हैं। व्यक्ति को लगता है कि यह भी ले लूँ और वह भी ले लूँ। जो सामान उसके लिए आवश्यक नहीं, वह भी जरूरी तथा आराम बढ़ाने वाला दिखाई देता है। इस तरह बढ़ती खरीद-इच्छा और वस्तुओं की उपयोगिता का बढ़ा-चढ़ाकर अनुभव करना मन पर जादू के असर के प्रत्यक्ष लक्षण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष खाली मन पर बाज़ार का असर होता है और भरी जेब उसे बढ़ाती है; इसका लक्षण हर वस्तु को जरूरी समझकर खरीदने की उत्कंठा है।

त्वरित सुझाव: कब के उत्तर में मन और जेब की स्थिति तथा कैसे के उत्तर में यह भी लूँ, वह भी लूँ वाली लालसा स्पष्ट कीजिए।

12(क). शिरीष और महात्मा गाँधी की तुलना किस आधार पर की गई है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी के शिरीष के फूल में वृक्ष की प्रतिकूल मौसम में खिलने की क्षमता मानवीय आदर्श बनती है।
- शिरीष और गाँधी की तुलना बाहरी रूप पर नहीं, कठिन परिस्थितियों में अविचल रहकर जीवन और लोकहित से जुड़े रहने पर आधारित है।

चरण 1: शिरीष की विशेषता शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी फूलता रहता है। जब प्रचंड ताप से आसपास का वातावरण व्याकुल होता है, तब भी वह सरस और प्रसन्न बना रहता है। उसका अवधूत-स्वभाव बाहरी कठिनाइयों से हार न मानने, निर्लिप्त रहने और जीवन के लिए आवश्यक रस ग्रहण करके खिलते रहने की प्रेरणा देता है।

चरण 2: गाँधी से साम्य लेखक को शिरीष में महात्मा गाँधी के स्वभाव का साम्य दिखाई देता है। सामाजिक अशांति, हिंसा और विरोध के बीच गाँधी अपने आदर्शों पर दृढ़ रहे तथा लोगों के बीच आशा और शांति का संदेश फैलाते रहे। परिस्थितियों की कठोरता ने उन्हें लोकमंगल के प्रयास से विमुख नहीं किया। जैसे शिरीष भीषण ताप के बीच फूल देता है, वैसे ही गाँधी कठिन वातावरण में भी मानवता और प्रेम का संबल देते हैं।

चरण 3: तुलना का केंद्रीय आधार दोनों में प्रतिकूल परिस्थितियों के सामने अविचल रहने और अपनी सहजता बनाए रखने की शक्ति है। उनकी अनासक्ति निष्क्रियता नहीं है; वे जीवन से जुड़े रहकर अपना सकारात्मक कार्य करते हैं। शिरीष की सरसता और गाँधी की लोककल्याणकारी सक्रियता इस समान गुण को प्रकट करती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष शिरीष और गाँधी की तुलना उनके अवधूत-स्वभाव, अनासक्त दृढ़ता और कठिन परिस्थितियों में भी जीवन तथा लोकमंगल के लिए सक्रिय रहने के आधार पर की गई है।

त्वरित सुझाव: पहले शिरीष की गर्मी में खिलने की क्षमता लिखिए, फिर गाँधी की विपत्ति में दृढ़ लोकसेवा से उसका स्पष्ट साम्य स्थापित कीजिए।

12(ख). 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर जीजी की दृष्टि में त्याग और दान को परिभाषित कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- त्याग में अपनी आवश्यकता की वस्तु छोड़कर दूसरों के कल्याण की भावना प्रधान होती है।
- दान का मूल्य वस्तु की अधिकता से नहीं, देने वाले के मन और उसके अभाव से निर्धारित होता है।

चरण 1: त्याग का अर्थ स्पष्ट करना जीजी के अनुसार अपने पास बहुत अधिक होने पर कुछ दे देना सच्चा त्याग नहीं है। त्याग तब होता है जब मनुष्य स्वयं किसी वस्तु की कमी अनुभव कर रहा हो, फिर भी व्यापक हित के लिए उसका कुछ अंश छोड़ दे। अकाल में पानी की भारी कमी होते हुए भी इंदर सेना पर पानी डालना इसी भावना का उदाहरण है। जीजी इसे केवल पानी की बरबादी मानने के बजाय वर्षा की कामना से किया गया त्याग समझती हैं।

चरण 2: दान और उसके फल का संबंध जीजी मानती हैं कि दान में पहले कुछ देना पड़ता है, तभी पाने की आशा सार्थक होती है। किसान अच्छे बीजों को अपने पास सुरक्षित रखने के बजाय खेत की मिट्टी में डालता है; उसी से आगे भरपूर फसल मिलती है। इसी तरह पानी के अभाव में थोड़ा पानी अर्पित करना लोककल्याण के लिए किया गया दान है। उनकी दृष्टि में दान का आधार निःस्वार्थ विश्वास, उदारता और सबके सुख की कामना है। जीजी का तर्क यह भी है कि व्यक्तिगत बचत से आगे बढ़कर समूचे गाँव की भलाई के लिए उदार होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी की दृष्टि में अभाव में भी अपने हिस्से की उपयोगी वस्तु लोकहित में छोड़ना त्याग है और बिना स्वार्थ उसे अर्पित करना दान है। पानी और बीज के उदाहरण इस विचार को स्पष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पानी की कमी और किसान द्वारा बीज बोने के उदाहरण को त्याग तथा दान की भावना से जोड़ें।

12(ग). पहलवान की ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था? कैसे? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ढोलक की लय भय और निराशा से जूझते ग्रामीणों के लिए मानसिक सहारा बनती है।
- कथा में पहलवान का संघर्ष और ढोलक की ताल जीवन के प्रति जिजीविषा जगाते हैं।

चरण 1: गाँव की स्थिति और ढोलक का प्रभाव हैजे और मलेरिया से पीड़ित गाँव में मृत्यु, सन्नाटा और भय का वातावरण था। रात के अँधेरे में ग्रामीण असहाय और निराश अनुभव करते थे। ऐसे समय पहलवान की ढोलक की आवाज़ पूरे गाँव में गूँजती थी। उसे सुनकर लोगों को लगता था कि इस भयावह वातावरण में भी कोई जाग रहा है और विपत्ति से लड़ रहा है। इससे उनके मन का डर कम होता और उन्हें सहारा मिलता था।

चरण 2: आवाज़ साहस कैसे जगाती थी ढोलक की परिचित, उत्साहपूर्ण ताल पहलवान के अखाड़े और उसकी संघर्षशीलता की याद दिलाती थी। उसकी लय मानो हार न मानने और विपरीत परिस्थिति से मुकाबला करने का संदेश देती थी। रोगियों और उनके परिवारों के लिए वह मृत्यु के सन्नाटे के बीच जीवन की आवाज़ बन जाती थी। वह बीमारी का उपचार नहीं करती थी, पर निराश ग्रामीणों में मानसिक बल, धैर्य और जीवित रहने की इच्छा जगाती थी। इसलिए गाँव वाले उसकी आवाज़ सुनकर कुछ समय के लिए अपने दुःख और आशंकाओं को भूल जाते थे। ढोलक पूरे गाँव के सामूहिक मनोबल का आधार बनती थी।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान की ढोलक पूरे गाँव का भय और अकेलापन घटाकर उसमें साहस तथा जिजीविषा जगाती थी। मृत्यु से घिरे वातावरण में उसकी संघर्षपूर्ण ताल जीवन के बने रहने का भरोसा देती थी।

त्वरित सुझाव: ढोलक के प्रभाव को बीमारी मिटने से न जोड़ें; उसका असर ग्रामीणों के मनोबल और जीने की इच्छा पर था।

12(घ). आपके विचार से चार्ली चैप्लिन की सर्व-स्वीकार्यता के क्या कारण हो सकते हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का मूक अभिनय भाषा और देश की सीमाओं को पार करता है।
- हास्य के भीतर करुणा और साधारण मनुष्य का संघर्ष दर्शकों को आत्मीय लगता है।

चरण 1: भाषा से परे प्रभाव और आम आदमी की पहचान चार्ली चैप्लिन की सर्वस्वीकार्यता का बड़ा कारण उनकी मूक अभिनय-कला है। चेहरे के भाव, चाल, हावभाव और शारीरिक चेष्टाओं से वे अपनी बात स्पष्ट कर देते हैं। इसलिए अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले दर्शक भी उनके हास्य को समझ लेते हैं। उनका पात्र अभावों से जूझता, अपमान सहता और बार-बार ठोकर खाकर उठता साधारण मनुष्य है। दर्शक उसमें अपनी कठिनाइयों और कमजोरियों को पहचानकर उससे जुड़ जाते हैं।

चरण 2: हास्य, करुणा और मानवीय समानता चार्ली केवल दूसरों की हँसी नहीं उड़ाते; वे अपने पात्र को भी हास्यास्पद स्थितियों में रखकर दर्शक को स्वयं पर हँसना सिखाते हैं। उनकी फिल्मों में हँसी और दुःख साथ-साथ आते हैं, जिससे मनोरंजन के साथ संवेदना भी पैदा होती है। गरीबी, असुरक्षा, प्रेम, भूख और सम्मान की इच्छा जैसे अनुभव सभी समाजों के हैं। इन साझा भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति उन्हें बच्चे-बूढ़े, शिक्षित-अशिक्षित तथा विभिन्न देशों के लोगों में लोकप्रिय बनाती है। यही आत्मीय पहचान उनके पात्र को किसी एक देश या वर्ग तक सीमित नहीं रहने देती।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली की सर्वस्वीकार्यता का आधार भाषा से स्वतंत्र अभिनय, आम आदमी से आत्मीयता और हास्य में घुली करुणा है। उनकी कला साझा मानवीय अनुभवों को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: तीन जुड़े कारण लिखें: मूक अभिनय, साधारण मनुष्य का संघर्ष और हँसी के साथ करुणा का मेल।

12(ङ). 'नमक' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी राजनीतिक सीमाओं के बावजूद बने हुए मानवीय और सांस्कृतिक संबंधों को उभारती है।
- नमक मातृभूमि की स्मृति, अपनापन और साझा जीवन का प्रतीक बनता है।

चरण 1: विभाजन के बाद भी बना आत्मीय संबंध नमक कहानी की मूल संवेदना यह है कि देश का विभाजन मनुष्यों के हृदयों और स्मृतियों को विभाजित नहीं कर सकता। राजनीतिक सीमाएँ खिंच जाने पर भी अपनी जन्मभूमि, वहाँ के स्वाद, भाषा और लोगों से लगाव बना रहता है। भारत में रहने वाली सिख बीबी का लाहौरी नमक मँगवाना केवल किसी खाद्य पदार्थ की इच्छा नहीं है; उसमें अपने छूटे हुए वतन के प्रति गहरा प्रेम और स्मृति छिपी है। सफिया इस भावना को समझकर नमक लाने का प्रयत्न करती है।

चरण 2: नमक के माध्यम से मानवता का संदेश सीमा पर मिलने वाले कर्मचारियों की प्रतिक्रियाएँ भी बताती हैं कि स्थान बदल जाने पर अपने पुराने घर की याद मिटती नहीं है। वे नियमों के बीच इस निजी लगाव को समझते हैं और मानवीय सहानुभूति प्रकट करते हैं। इस प्रकार साधारण नमक दोनों देशों के लोगों के साझा अतीत और आत्मीयता को जोड़ने वाला प्रतीक बन जाता है। कहानी धर्म, राष्ट्र और सीमा के भेदों से ऊपर मनुष्य की करुणा तथा पारस्परिक समझ को महत्त्व देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी की मूल संवेदना वतन से अविच्छिन्न लगाव और सीमाओं से बड़ी मानवीय आत्मीयता है। नमक उस साझा स्मृति और प्रेम का प्रतीक है जिसे राजनीतिक विभाजन समाप्त नहीं कर सकता।

त्वरित सुझाव: नमक को केवल खाने की वस्तु न कहें; उसे लाहौर की स्मृति, वतन के प्रेम और मानवीय संबंधों का प्रतीक बनाएँ।

13. भूषण के द्वारा ऊनी ड्रेसिंग गाउन देने पर यशोधर पंत के मन में उत्साह का अभाव किन जीवन मूल्यों की उपेक्षा के कारण दिखाई देता है? बुज़ुर्ग पीढ़ी हमसे क्या अपेक्षा करती है? (लगभग 150 शब्दों में लिखिए) [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में उपहार के माध्यम से दो पीढ़ियों के जीवनबोध का अंतर उभरता है।
- बुज़ुर्गों के प्रति सम्मान में उनकी रुचियों, आदतों और भावनाओं को समझना तथा उन्हें आत्मीय समय देना शामिल है।

चरण 1: प्रसंग और उत्तर की रूपरेखा भूषण पिता को ऊनी ड्रेसिंग गाउन देता है और सुबह दूध लाने जाते समय उसे पहनने की बात कहता है। यशोधर पंत उपहार में व्यक्त सुविधा के भाव को अनुभव करते हुए भी इस बात से आहत होते हैं कि बेटे ने दूध लाने की उनकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने की बात नहीं कही। उत्तर में पहले इसी प्रसंग का अर्थ स्पष्ट करना है, फिर बुज़ुर्गों की अपेक्षाओं को आत्मीयता, सहभागिता और गरिमा से जोड़ना है। उनके उत्साह के अभाव को केवल नई वस्तु के प्रति अरुचि कहना अधूरा होगा।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर भूषण द्वारा ऊनी ड्रेसिंग गाउन दिए जाने पर यशोधर पंत का उत्साहित न होना पारिवारिक आत्मीयता, संवेदनशीलता और दायित्व की साझेदारी की उपेक्षा को प्रकट करता है। भूषण उनसे सुबह दूध लाने जाते समय गाउन पहनने को कहता है, किंतु यह नहीं कहता कि अब दूध वह स्वयं ले आएगा। पिता को वस्तु से अधिक ऐसे अपनत्व की अपेक्षा थी। उपहार उपयोगी होने पर भी उनके मन की आवश्यकता को पूरी तरह नहीं समझता। आधुनिक जीवनशैली अपनाने वाले बच्चों और परंपराओं से जुड़े पिता के बीच संवाद का अंतर भी इस उदासी का कारण है। बुज़ुर्ग पीढ़ी चाहती है कि हम उसके अनुभवों का आदर करें, उसकी बात धैर्य से सुनें और उसे पारिवारिक निर्णयों में सहभागी बनाएँ। सहायता करते समय उसकी गरिमा भी बनाए रखें। महँगे उपहारों के साथ समय, स्नेह और जिम्मेदार व्यवहार आवश्यक हैं। इससे बुज़ुर्ग अपने ही घर में उपेक्षित अनुभव नहीं करते और पीढ़ियों का संबंध विश्वासपूर्ण बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर पंत की उदासी आत्मीयता और साझा जिम्मेदारी की कमी से जुड़ी है। बुज़ुर्गों को सम्मान, संवाद, सहभागिता और व्यवहार में प्रकट स्नेह की अपेक्षा होती है।

त्वरित सुझाव: दूध लाने की जिम्मेदारी वाले प्रसंग को अवश्य जोड़ें; उसी से उपहार और वास्तविक आत्मीयता के अंतर का ठोस प्रमाण मिलता है।

14(क). आपके विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में 'जूझ' के लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? लगभग 150 शब्दों में तर्क सहित उत्तर दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' में शिक्षा पाने की आकांक्षा और उसके लिए किए गए संघर्ष का वर्णन है।
- तर्कपूर्ण मूल्यांकन में आर्थिक परिस्थिति को समझते हुए शिक्षा से मिलने वाले विवेक, आत्मनिर्भरता और भविष्य के अवसरों का महत्व स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: पाठ के आधार पर पक्ष निर्धारित करना लेखक खेती के साथ पढ़ाई जारी रखना चाहता है। पिता खेत के काम को प्राथमिकता देकर उसकी शिक्षा रोकते हैं। दत्ता जी राव लेखक की पढ़ने की इच्छा को महत्व देते हैं और उसके पिता को उसे विद्यालय भेजने के लिए समझाते हैं। अतः लेखक और दत्ता जी राव के पक्ष में तर्क देना उचित है। उत्तर में पिता की आर्थिक चिंता को समझना चाहिए, किंतु उससे शिक्षा रोकने को उचित नहीं ठहराना चाहिए। लेखक का श्रम और पढ़ाई दोनों के प्रति निष्ठावान होना उसके पक्ष का प्रमुख आधार है।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर मेरे विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में 'जूझ' के लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक समझता था कि शिक्षा उसके जीवन को नई दिशा दे सकती है। वह खेती के श्रम से भागना नहीं चाहता था; खेत का काम करते हुए भी पढ़ने के लिए तैयार था। इससे उसकी लगन और जिम्मेदारी स्पष्ट होती है। दत्ता जी राव ने उसकी प्रतिभा तथा पढ़ने की इच्छा को समझा और पिता को उसे विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किया। उनका दृष्टिकोण बच्चे के भविष्य के प्रति संवेदनशील था। इसके विपरीत पिता खेत के काम को प्राथमिकता देकर लेखक की पढ़ाई रोकना चाहते थे। परिवार की आर्थिक जरूरतें वास्तविक थीं, लेकिन केवल तत्काल लाभ के लिए शिक्षा से वंचित रखना उचित नहीं था। शिक्षा व्यक्ति को विवेक, आत्मविश्वास और उन्नति के अवसर देती है। लेखक का संघर्ष सिद्ध करता है कि परिश्रम के साथ पढ़ाई जारी रखने का अवसर मिले तो कठिन परिस्थितियों में भी प्रतिभा विकसित हो सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक और दत्ता जी राव का दृष्टिकोण उचित था, क्योंकि वह शिक्षा तथा श्रम के समन्वय से भविष्य सँवारने का अवसर देता है। पिता की चिंता समझने योग्य थी, पर पढ़ाई रोकना उसका उचित समाधान नहीं था।

त्वरित सुझाव: अपना पक्ष बताने के बाद लेखक की खेत में काम करते हुए पढ़ने की तत्परता और दत्ता जी राव के हस्तक्षेप को प्रमाण बनाएँ।

14(ख). "सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।" सोदाहरण पुष्टि कीजिए। (लगभग 150 शब्दों में) [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी के पाठ 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के अवशेषों के आधार पर सिंधु-सभ्यता की समृद्धि और उसके संयमित सौंदर्यबोध का परिचय मिलता है।
- साधन-संपन्नता का प्रमाण सुनियोजित नगर और उपयोगी सार्वजनिक सुविधाएँ हैं; भव्यता के आडंबर का अभाव विशाल राजमहलों तथा राजसत्ता के प्रदर्शनकारी स्मारकों के न मिलने से स्पष्ट होता है।

चरण 1: कथन का आशय और उदाहरण चुनना उत्तर में समृद्धि और दिखावे के बीच अंतर स्पष्ट करना है। नगर की सड़कें, पकी ईंटों के मकान, जलनिकासी, कुएँ और महाकुंड विकसित नागरिक जीवन के प्रमाण हैं। दूसरी ओर, महलों और भव्य मंदिरों का अभाव बताता है कि संपन्नता को केवल शासकों की प्रतिष्ठा बढ़ाने में नहीं लगाया गया। मुहरों, मूर्तियों और आभूषणों का उल्लेख कलात्मक रुचि के प्रमाण के रूप में करना उचित है।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर सिंधु-सभ्यता के अवशेष उसकी साधन-संपन्नता के साथ संयमित जीवन-दृष्टि भी प्रकट करते हैं। मोहनजोदड़ो की सीधी सड़कें, सुनियोजित गलियाँ, पकी ईंटों के मकान, ढकी हुई नालियाँ और कुएँ विकसित नगर-व्यवस्था के प्रमाण हैं। घरों में स्नान की व्यवस्था तथा सार्वजनिक महाकुंड स्वच्छता और सामुदायिक सुविधाओं के प्रति सजगता बताते हैं। इतनी

सुविधाएँ पर्याप्त तकनीकी ज्ञान और आर्थिक समृद्धि के बिना संभव नहीं थीं।

फिर भी वहाँ मिस्र की तरह विराट राजकीय स्मारक, भव्य राजमहल या विशाल मंदिर नहीं मिलते। भवनों में आकार की विशालता और सजावट के प्रदर्शन से अधिक उपयोगिता दिखाई देती है। मुहरों, छोटी मूर्तियों, मिट्टी के बरतनों और आभूषणों से कलात्मक रुचि अवश्य झलकती है, किंतु वह दिखावटी भव्यता में नहीं बदलती। लेखक इस सभ्यता में राजसत्ता अथवा धर्मसत्ता के प्रदर्शन की अपेक्षा समाज के अनुशासन और नागरिक व्यवस्था को प्रमुख पाता है। इस प्रकार सिंधु-सभ्यता की संपन्नता जनजीवन की सुव्यवस्था और सुरुचि में व्यक्त होती थी।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु-सभ्यता तकनीकी, आर्थिक और कलात्मक दृष्टि से विकसित थी। उसकी विशेषता विशालता का प्रदर्शन करने के बजाय उपयोगी नगर-व्यवस्था, स्वच्छता और संयमित सौंदर्यबोध को महत्त्व देना थी।

त्वरित सुझाव: पुष्टि के लिए दो पक्ष साथ रखें—समृद्धि में नगर-योजना और जलनिकासी; आडंबर के अभाव में विराट राजमहलों तथा मंदिरों का न मिलना।